चकमक

मार्च, 1994

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00

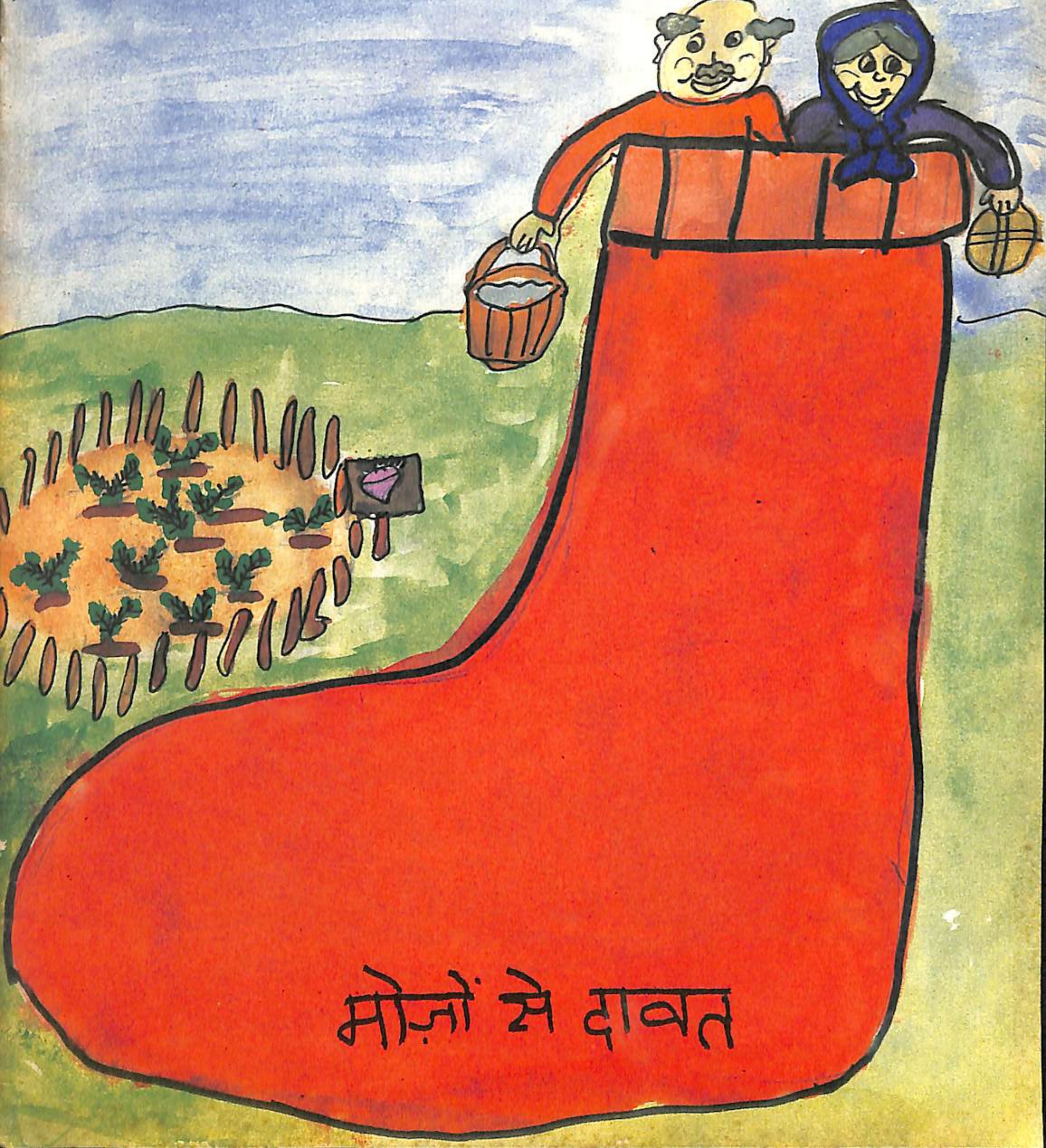

शिखा, चौथी, दिल्ली

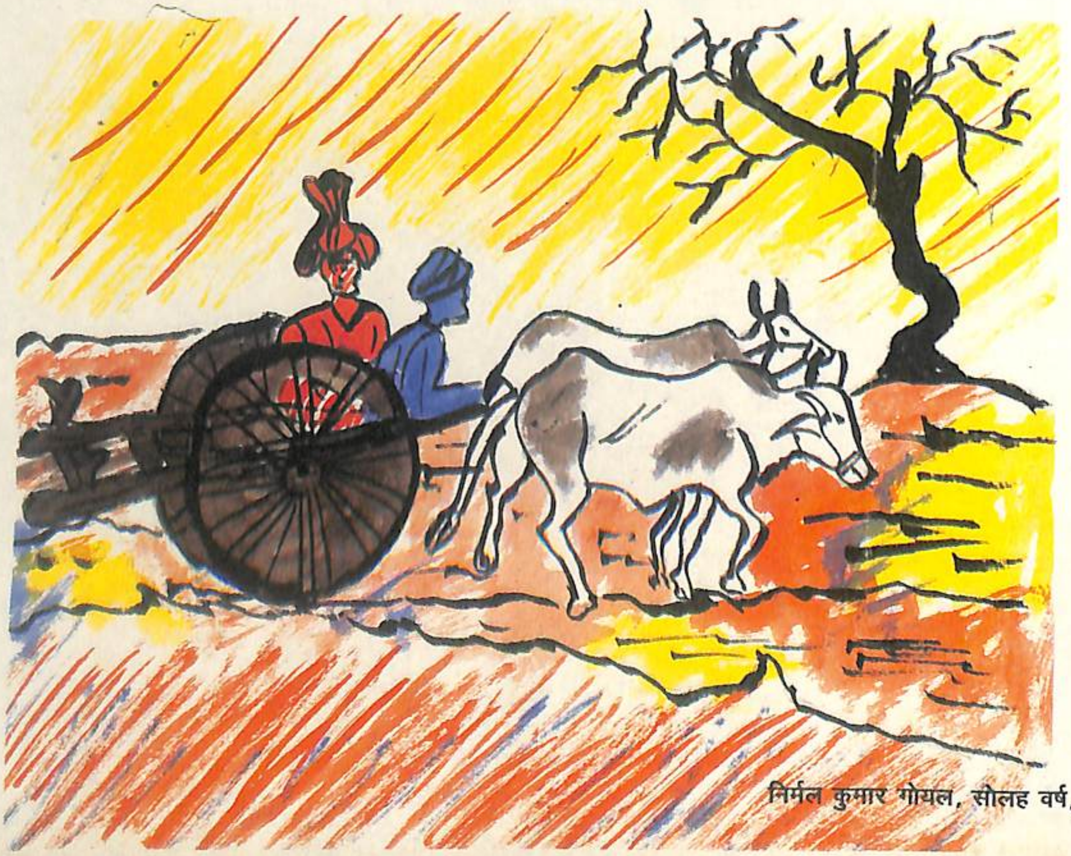

निर्मल कुमार गोयल, सोलह वर्ष, पटना, बिहार

श्यामलाल भुजावदिया, छठवीं, बालागुड़ा, उज्जैन, म. प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-9 अंक 9 मार्च, 1994

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

संपादन सहयोग

टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : पांच रुपए

छमाही : पच्चीस रुपए

वार्षिक : पचास रुपए

डाक खर्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

कागज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,

ई-1/208,

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल-462016

(म. प्र.)

फ़ोन : 563380

103 वें अंक में.....

विशेष

23 ❑ मोज़ों से दावत : चित्रकथा

39 ❑ कुछ निराले पुल

कविताएँ

8 ❑ आँगन में बोएंगे खिलौने

38 ❑ मन करता है!

धारावाहिक

10 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना? - 7

19 ❑ गणित के खेल

हर बार की तरह

4 ❑ मेरा पन्ना

14 ❑ चित्रकथा : किस्सा आफ़न्ती का

17 ❑ हमारे वृक्ष - 23 : बेर

18 ❑ खेल कागज़ का

36 ❑ माथा पच्ची

और यह भी

2 ❑ पाठक लिखते हैं..

3 ❑ चकमक समाचार

हमने कुछ बच्चों को 'मोज़ों से दावत' कहानी सुनाकर चित्र बनाने के लिए कहा था। जो चित्र हमें मिले उनमें से एक आवरण पर और दूसरा पिछले आवरण पर प्रकाशित है।
आवरण : ऋचा, ग्यारह वर्ष, भोपाल

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

समता की कविता

आज सुबह एक चूहा आया
कान पकड़कर हमें उठाया
चूहा हमको देख रहा था
बाहर से राजा चिल्लाया
100 वाँ चकमक आया
मैंने देखा चकमक
चकमक के बाहर भी चकमक
चकमक के भीतर भी चकमक
चकमक चकमक चकमक चकमक
हमें बहुत मन भाया
चूहा आकर फिर गुर्राया
बोला चकमक में मैं आया
चूहा चूहे पर जा बैठा
मैंने चकमक देखा
चकमक में चूहा बैठा था
चूहे के नीचे थी चकमक
हमें बहुत मन भाया
चकमक आया चकमक आया।

नहीं मैं कोई नन्हीं-सी गुड़िया नहीं हूँ। बड़ी-सी लड़की हूँ समता, जो कभी-कभी भावना बनकर कविता लिख देती है। चकमक का 100 वाँ अंक जब हाथ में आया, मैंने पढ़ना शुरू किया और मैं पहुँच गई नदियों के किनारे, पहाड़ों के ऊपर एक अलग-सी दुनिया में। यूँ तो चकमक पढ़ते-पढ़ते कब बड़ी हो गई, पता ही नहीं चला। पर एक में सौ चकमक पढ़कर फिर उसी उम्र में पहुँच गई, जब चकमक पढ़ना शुरू किया था।

और लगा जब आ ही गई हूँ पीछे तो बच्ची बन लिख दूँ, एक बच्चों की कविता। और मैंने कविता को सुधारा भी नहीं। छोटी बच्ची की तरह खुश होती रही, कविता पढ़-पढ़कर अब जब मैं 21 साल की हूँ, 100 वीं चकमक ने कर दिया मुझे 8 साल पीछे। चकमक तो इतनी अपनी है कि धन्यवाद भी नहीं कह सकती।

❑ **समता, भोपाल**

__पत्रिका__-चकमक बेहद पसन्द आई। बहुत ही सारगर्भित सामग्री और अत्यधिक उपयोगी। साथ ही बालकों के लिए ढेरों ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजनपूर्ण वातावरण देने वाली।

आज बच्चों को जो ऊटपटांग किस्से-कहानी पढ़ने को मिल रहे हैं, वही यह उन्हें सार्थक सामग्री दे रही है। आप सभी के श्रम को नमन है। अपनी रचनात्मकता के साथ यह और भी गरिमामयी बने, शुभकामनाएँ।

❑ ***सावित्री परमार, जयपुर, राजस्थान***

__सृजन__ के रूप में चकमक का शतक पूर्ण हुआ, साथ ही सृजन में भाग लेने वाले अपने विद्यालय के चौदह छात्र-छात्राओं के लिए आपके द्वारा भेजे गए पन्द्रह अंक प्राप्त कर मन में अतीव प्रसन्नता हुई।

आपका पत्र बच्चों को पढ़कर सुनाया और सम्बंधित बच्चों को बुला-बुलाकर एक-एक अंक वितरित कर दिया है।

दो बच्चियों प्रीतिबाला का चित्र एवं स्नेहलता की कविता के चयन ने न केवल बच्चों में बल्कि विद्यालय के शिक्षकों में भी एक नई स्फूर्ति, ललक एवं उत्साह जगाया है।

बच्चों, शिक्षकों एवं ग्राम के लोगों (पालकों) के लिए यह एक नया अनुभव है।

❑ ***प्रबोध मिश्र 'हितैषी', प्राचार्य, शा.हा. सिरसी, धार, म.प्र.***

सौवाँ अंक एक तरह से इसके अंक एक से अब तक का सिंहावलोकन अंक है। मुझे खुशी है कि मैं पहले अंक से अब तक बराबर इसका पाठक हूँ। मेरे दोनों पुत्रों अनिमेष तथा अलिन्द ने भी चकमक से बहुत कुछ जाना और सीखा है।

❑ ***वाचस्पति, काशीपुर, नैनीताल***

आप चकमक पत्रिका के एक-के बाद एक बेहतरीन अंक निकाल रहे हैं। इसके लिए मेरी एवं मेरे समस्त स्टाफ तथा छात्र-छात्राओं की बधाई स्वीकारें।

❑ ***प्रधानाध्यापक, माध्यमिक विद्यालय पुलिस लाईन, राजगढ़, म.प्र.***

नाट्य कार्यशाला

फोटो : घनश्याम शर्मा

पिछले दिनों भोपाल में मूक-बधिर बच्चों के लिए एक नाट्य कार्यशाला आयोजित की गई। एक माह की इस कार्यशाला में आशा निकेतन, भोपाल के बच्चों ने भाग लिया। कार्यशाला के निदेशक थे श्री प्रेम गुप्ता। हमने उनकी सहकर्मी श्रीमती वैशाली गुप्ता से कार्यशाला के बारे में विस्तार से बातचीत की।

जैसा कि ज़ाहिर है कार्यशाला में भाग लेने वाले बच्चे बोल या सुन नहीं सकते थे, इसलिए इन बच्चों को ध्वनि आदि को पहचानने या महसूस करने के लिए कुछ ख़ास अभ्यास करवाए गए।

प्रतिदिन सबसे पहले बच्चों को शारीरिक अभ्यास कराया जाता था। उसके बाद बच्चों को घुटनों तक पानी में खड़ा करके तेज़ ध्वनि वाले बाजे (जैसे नगड़िया) बजाए जाते। इन बाजों से निकलने वाली ध्वनि की तरंगें पानी के माध्यम से बच्चों तक पहुँचतीं और वे उसे महसूस करने की कोशिश करते। एक अन्य अभ्यास में बच्चों को एक लाइन में खड़ा करके, उनकी पीठ की तरफ़, उनसे कुछ दूरी पर कोई बाजा बजाया जाता। ध्वनि पहचानने और महसूस करने के लिए ऐसे ही कई अन्य अभ्यास कराए गए।

ध्वनि की पहचान के बाद रंग और ध्वनि का तालमेल कराने वाले अभ्यास कराए जाते। उदाहरण के तौर पर अलग-अलग बच्चों को अलग-अलग रंग के कपड़े दिए जाते और जब तेज़ ध्वनि वाले बाजे बजाए जाते, तो जिस बच्चे के पास चटख रंग का कपड़ा होता (जैसे केसरिया) तो वह ओजपूर्ण भावों का प्रदर्शन करता। इसी तरह जब मातमी धुन बजाई जाती तो जिसके पास सफ़ेद कपड़ा होता वह उसे ज़मीन पर बिछाकर मातम की मुद्रा में बैठ जाता।

चेहरे पर आने वाले भावों, होठों के चलने और बोलने पर चेहरे पर उभरने वाली मुद्राओं के ज़रिए अभिनय का अभ्यास कराया जाता। जैसे कि किसी शब्द या वाक्य को गुस्से में बोला जाए तो चेहरे पर किस तरह की मुद्रा या भाव होगा या फिर शान्त होकर किसी बात को कहा जाए तो चेहरे पर क्या भाव दिखेगा आदि आदि। इसी तरह होंठ तथा तालू से उच्चारित होने वाले शब्दों का लगातार अभ्यास कराया जाता ताकि बच्चे उनसे परिचित हो जाएँ। फिर हाथ से ताली देकर विभिन्न शारीरिक गतियों का अभ्यास कराया जाता।

कार्यशाला के दौरान ही इन अभ्यासों का उपयोग करते हुए एक बैले (नृत्य नाटिका) तैयार किया गया। बैले-संगीत पर नृत्य और अभिनय करते हुए किसी कथा को कहने की एक विधा है। इसमें संवाद नहीं होते हैं। मतलब यह कि ठीक से बोलने-सुनने वाले लोग भी जब बैले का प्रदर्शन करते हैं, वे भी मुँह से कुछ नहीं बोलते।

16 जनवरी, 94 को भोपाल के रवीन्द्र नाट्यगृह में इस बैले का सफल प्रदर्शन किया गया। 'सिर्फ़ इतिहास नहीं' नाम के इस बैले में अशोक की कलिंग विजय और उसके बाद युद्ध की विभीषका को लेकर उसके मन में उठे सवालों को दर्शाया गया था। बच्चों ने संगीत पर ताल से ताल मिलाते हुए, चरित्र के अनुरूप भाव व्यक्त करते हुए इसे प्रस्तुत किया। उनके अभिनय को देखने से यह पता नहीं चलता था कि वे मूक-बधिर हैं। इस बैले की पटकथा श्री नवल शुक्ल ने लिखी थी।

बेशक यह एक अनूठा और सफल प्रयोग था। इस कार्यशाला और बैले के प्रदर्शन के लिए आर्थिक मदद दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर और मध्यप्रदेश कला परिषद ने की।

रपट ❑ कविता सुरेश

पोस्ट बॉक्स और उसका दोस्त

एक गाँव में एक लड़का रहता था। वह हमेशा कहानी या चित्र बनाता था। उसके घर वाले उसे डाँटते और मारते भी थे। बेचारा लड़का दुखी होकर स्कूल चला जाता। स्कूल से आने के बाद वह उदास रहता। उसे उदास देखकर उसके घर के सामने लगा पोस्ट बॉक्स बोला, ''अरे दोस्त तू इतना उदास क्यों रहता है।''

पोस्ट बॉक्स ने उस लड़के से उसका कारण पूछा। लड़के ने सारी बात बता दी। पोस्ट बॉक्स ने कहा, ''बस इतनी-सी बात है। चलो आज से हम लोग दोस्त बन जाते हैं। तुम घर जाकर चित्र और कहानी लाकर मुझे दे दो। मैं तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को खुश कर दूंगा।''

लड़का बोला, ''मगर यह सब होगा कैसे?''

पोस्ट बॉक्स ने कहा, ''सुन मेरा एक दोस्त (पोस्ट बॉक्स) भोपाल में चकमक कार्यालय की दीवार पर रहता है। उसको मैं तुम्हारे चित्र और कहानी भेज दूंगा।''

''इससे क्या होगा?''

''अरे तू इतना भी नहीं समझता। मेरा दोस्त बड़ा खुशनसीब है। वह हर रोज़ कई चित्र देखता है और कई कहानियाँ पढ़ता है। और पढ़ने के बाद उन्हें चकमक कार्यालय में दे देता है। उससे क्या होता है। मालूम है?''

''नहीं।''

पोस्ट बॉक्स ने कहा, ''उस कार्यालय से एक पत्रिका निकलती है, जिसका नाम है चकमक।

''ये चकमक क्या है?'' लड़के ने पूछा।

पोस्ट बॉक्स ने कहा, ''इसमें तेरे जैसे लड़कों के चित्र, कहानी छपते हैं। बहुत सारे बच्चे अपने अपने चित्र कहानी भेजते हैं।''

''अच्छा तो उसमें मेरी कहानी भी छपेगी। तो दोस्त मैं अभी लाया चित्र, कहानी।'' कहकर लड़का चला गया।

लड़के के जाने के बाद पोस्ट बॉक्स ने सोचा, 'इसको तो मैंने कह दिया लेकिन मेरा दोस्त पोस्ट बॉक्स बहुत ही कन्जूस है। वह हर पत्र का जवाब बहुत दिन के बाद देता है। लेकिन अगर मेरे दोस्त ने मुझसे थोड़ी भी कन्जूसी की तो मैं उसकी हड्डी-पसली तोड़ दूंगा।'

श्रीराम मोहन राजमाने, पाँचवी, सतारा, महाराष्ट्र

तभी लड़का अपने चित्र कहानी लिफ़ाफ़े में बन्द करके लाया और उसने पोस्ट बॉक्स को दे दिया। पोस्ट बॉक्स ने उस लिफ़ाफ़े को डाकिए को दिया। डाकिए ने एक सप्ताह के अन्दर उसे पोस्ट बॉक्स के दोस्त तक पहुँचा दिया। कई सप्ताह निकल गए कोई जवाब नहीं आया। पोस्ट बॉक्स ने लड़के से कहा, "तुम्हारे जो चित्र मैंने भेजे थे उनके जवाब तो नहीं आए।"

''तो क्या हुआ? जवाब नहीं आया तो फिर से चित्र, कहानी भेज देते हैं।'' लड़के ने झट से कहा।

''हाँ ठीक है, तुम चित्र और कहानी लेकर आओ मैं अबकी बार ख़ुद जाकर देखूंगा कि वहाँ कोई इन रचनाओं को कचरे के डिब्बे में तो जमा नहीं कर रहा है।''

पोस्ट बॉक्स गाड़ी में बैठे-बैठे सोच रहा था कि मैं उसे (अपने पोस्ट बॉक्स दोस्त को) अच्छी तरह धमकाकर आऊंगा। नकली मूँछ लगाकर उसे डराऊंगा ताकि वो समझ ले कि मैं बहुत गुस्से वाला हूँ।'' थोड़ी देर में वो अपने दोस्त के पास पहुँच गया। गुस्से में उससे बोला, ''क्यों तूने मेरी भेजी चिट्ठियों का जवाब क्यों नहीं भिजवाया?''

चकमक का पोस्ट बॉक्स उसे देखकर बोला, ''अरे तुम कब आए?''

पोस्ट बॉक्स बोला, ''मुझे बेवकूफ़ मत बना। इतने दिन हो गए पत्र का जवाब क्यों नहीं आया बताओ।''

इन दोनों पोस्ट बॉक्स का झगड़ा चल ही रहा था कि इतने में डाकिया वहाँ आ गया। उसने दो पोस्ट बॉक्स को लड़ते देखा तो वो सोचने लगा कि मैं कोई सपना तो नहीं देख रहा। घबराकर डाकिया पत्र फेंककर भाग गया। लड़के के दोस्त पोस्ट बॉक्स ने पत्र बिखरे हुए देखे तो उनमें उसे अपने उस दोस्त का पत्र दिखाई दिया। उसने अपने पोस्ट बॉक्स दोस्त से कहा, ''माफ़ करना भाई, मैं ख़ामोख़ाह तुम्हें परेशान कर रहा था।''

उसके दोस्त ने कहा, ''कोई बात नहीं मैं तो रोज़ ही ऐसे पत्र पढ़ता हूँ जिसमें ख़ूब गुस्से की बातें लिखी होती हैं। मुझे ऐसे पत्र पढ़ने में बहुत डर भी लगता है कि लिखने वाला कितना नाराज़ होगा।''

इसी समय किसी के आने की आवाज़ आई। दोनों पोस्ट बॉक्स चुप होकर देखने लगे कि कौन है। एक दीदी हाथ में एक लिफ़ाफ़ा लिए आईं और पोस्ट बॉक्स को देकर कहा कि लो इसे डाकिए को दे देना। पोस्ट बॉक्स ने लिफ़ाफ़ा देखकर अपने दोस्त पोस्ट बॉक्स से कहा, ''अरे यह तो तुम्हारे दोस्त के लिए चकमक है लो इसे ले जाओ।''

अपने दोस्त के लिए चकमक लेकर पोस्ट बॉक्स वहाँ से चला आया। घर पहुँचकर उसने लड़के को चकमक दी, तो लड़का बहुत खुश हो गया। उस लड़के के पिता भी खुश हो गए। उसके बाद लड़का अच्छे-अच्छे चित्र और कहानियाँ चकमक में भेजता है। दोनों दोस्त खुश रहते हैं।

❑ **जीवन सिंह सिसोदिया, दसवीं, निपानिया हूर हूर, देवास, म.प्र.**

पहेलियाँ

तीन कोने की तितली
नहा धोकर निकली।

❑

कभी नहीं मैं खाता पीता
कभी नहीं मैं चलता
तो भी सदा तुम्हारे
घर की चौकीदारी करता।

❑

काली हूँ मैं गहरा पेट
मेज़ पर जाती हूँ लेट
लोग मारते मुँह पर भाले
लिखते अक्षर काले-काले।

❑

हमने देखा ऐसा बन्दर
जो कूदे पानी के अन्दर।

❑ **अनिल शर्मा, आठवीं, बालागाँव, होशंगाबाद, म.प्र.**

बसन्त आया है!

आज बसन्त का दिन आया है,
फूलों को खिला लाया है।
आज तो होली भी आई है,
रंग रंगीले रंग लाई है॥

टिड्डे घूमें पत्तों पर,
भौरें घूमें फूलों पर।
और हम सब घूमें दुनिया पर॥

पीले-पीले फूल खिले हैं,
सरसों के यह खेत लगे हैं।
धरती पर सोना बिखरा है,
सबके मन को मोह रहा है॥

❑ *ईशान, पाँचवीं, दिल्ली*

प्रियंका भागवत, ग्यारह वर्ष, भोपाल, म.प्र.

होली आई

मस्ती है सब ओर छाई
देखो भाई, होली आई।

झूम रही है डाली-डाली
महक रही है बगिया
फसलें आई हैं खलिहानों में
खुशी से फूल रही है हरिया।

चुन्नु-मुन्नु, टिंकू, सब
रंग-बिरंगे दिखते हैं
कभी लाल तो कभी पीले
चेहरे बनते और मिटते हैं।

बैर भुलाकर प्रीत बढ़ाई
देखो भाई, होली आई।

❑ बसंत तिवारी, सत्रह वर्ष, भोपाल, म.प्र.

मोनिका पांडिया, भोपाल, म.प्र.

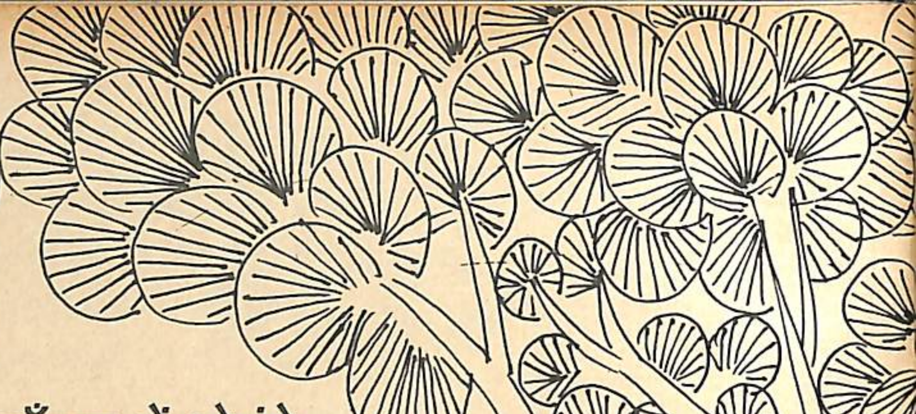

आँगन में बोएंगे खिलौने

आँगन में बोएंगे खूब खिलौने
पेड़ों पे आएंगे खूब खिलौने।

लटकेंगे बन्दरजी डाल-डाल पर
फुदकेंगे कौए डाल-डाल पर
गिलहरियाँ देखो लगाएँ छलांग
तितली ने कैसे बनाएँ हैं स्वांग
हिल-मिल के खेलेंगे खूब खिलौने
आँगन में बोएंगे खूब खिलौने।

खड़ा-खड़ा ताली बजाएगा भालू
खरगोश आँगन में खाएगा आलू
आसपास दौड़ेंगे हिरनों के झुण्ड
मेरे साथ खेलेंगे शेरों के झुण्ड
दौड़-दौड़ लाएंगे खूब खिलौने
आँगन में बोएंगे खूब खिलौने।

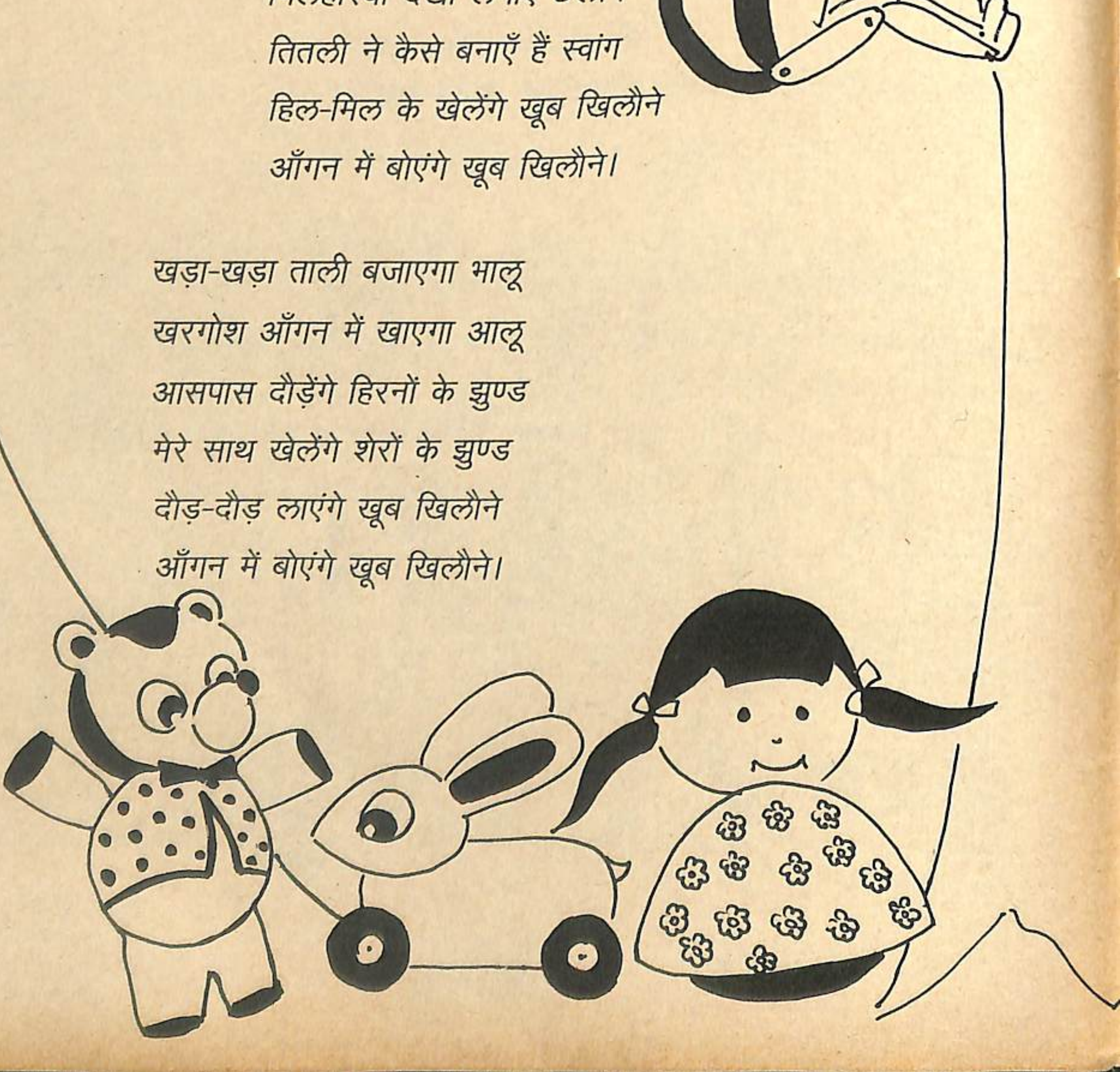

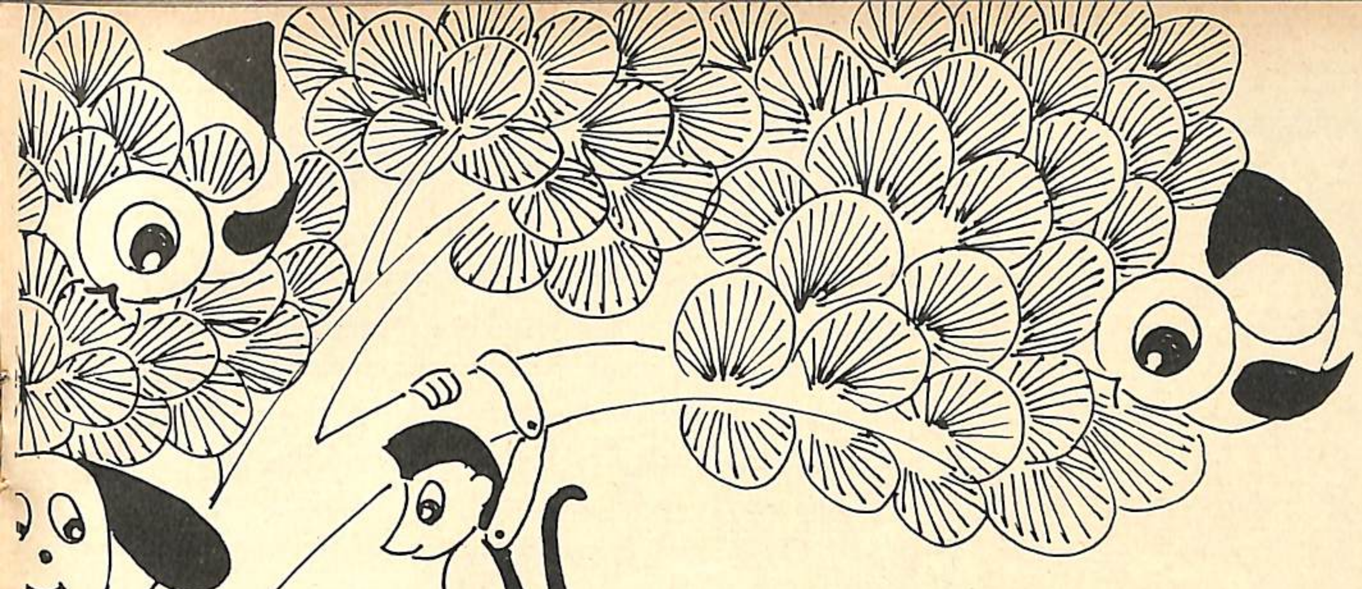

हाथी और ऊँट की सवारी करेंगे
कुत्ते और बिल्ली से यारी करेंगे
दौड़ेगी रेल-मोटर गाड़ी हमारी
बग्घी में निकलेगी अपनी सवारी
मिलजुल कर खेलेंगे खूब खिलौने
आँगन में बोएंगे खूब खिलौने।

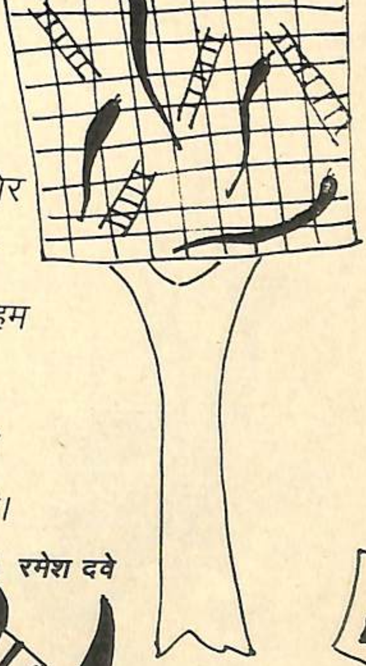

कोयल की कूक पर नाचे है मोर
गुड़ियों ने देखो मचाया है शोर
मकान, पार्क, पुलिया बनाएंगे हम
साँप-सीढ़ी, लूडो उगाएंगे हम
डाल-डाल आएंगे खूब खिलौने
हम सबको भाएंगे खूब खिलौने।

❑ रमेश दवे

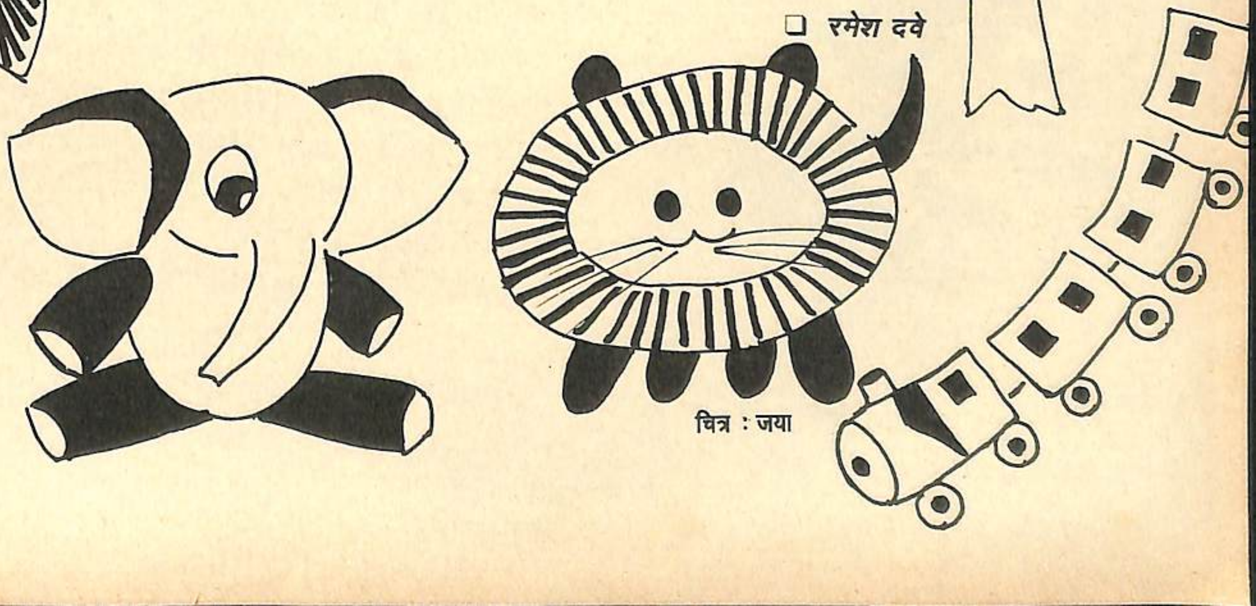

चित्र : जया

मनुष्य महाबली कैसे बना!

आदिम-मानव किस प्रकार मैमथ पर हमला करता था? इसे वही समझ सकता है, जो "आदमी" शब्द का मतलब समझता है, "आदमी" से मतलब "आदमी" नहीं, बल्कि "लोग"। औज़ार बनाना, शिकार करना, आग जलाना, आश्रयस्थल बनाना और ज़मीन को जोतना सीखने के लिए एक अकेले आदमी ने नहीं, बल्कि लोगों ने अपने हाथ और दिमाग एक साथ लगाए। अकेले आदमी ने नहीं, बल्कि पूरे मानव समाज ने करोड़ों लोगों के श्रम से संस्कृति और विज्ञान का निर्माण किया।

एक आदमी अकेला सदा जंगली जानवर ही बना रहता।

मानव समाज के भीतर श्रम ने जानवर को मनुष्य में बदल दिया।

जिस अकेली चीज़ ने उन्हें लोग बनाया, वह यह थी कि वे साथ-साथ रहते थे, साथ-साथ शिकार करते थे और साथ-साथ अपने औज़ार बनाते थे।

पूरा-का-पूरा मानव समूह मैमथ को घेरने में भाग लेता था। एक नहीं, बल्कि दर्ज़नों दोहरे फलवाले भाले उसकी बाल भरी बगलों पर फेंके जाते थे। अनेक पैरों और दर्ज़नों हाथों वाले एक प्राणी की तरह मानव समूह जानवर का पीछा करता था। केवल दर्ज़नों हाथों को ही नहीं, बल्कि दर्ज़नों दिमागों को भी साथ-साथ काम करना होता था।

मैमथ मनुष्यों से कई गुना बड़ा और शक्तिशाली था, मगर लोग उससे ज़्यादा चतुर थे।

मैमथ इतना विशालकाय था कि आदमी को आसानी से कुचलकर मार सकता था। लेकिन प्रागैतिहासिक मनुष्य ने उसके भार का ही उसके खिलाफ उपयोग किया और उस दैत्य को जीत लिया, जिसके चलते समय धरती थर्राया करती थी।

मैमथ को घेर लेने के बाद शिकारी लोग सूखी घास में आग लगा देते थे। जानवर आग से आतंकित हो जाता था, उसकी झबरी खाल झुलसने और धुआँ देने लगती थी और वह भागने लगता था। आग उसका पीछा करती और बिलकुल शिकारियों की चतुर योजना के अनुसार आग उसे सीधे एक दलदल की तरफ भगा देती थी। दलदल में वह धँसने लगता। दलदल से एक-एक पैर को खींचने की कोशिश करते हुए वह बेतरह चिंघाड़ता। पर इससे वह और भी गहरा धँसता चला जाता।

और तब शिकारी उसका ख़ात्मा करने के लिए उस पर टूट पड़ते।

मैमथ को घेरना और मारना कोई आसान काम न था। लेकिन इससे भी मुश्किल उसे पड़ाव तक घसीटकर लाना था, जो आम तौर पर नदी के ऊँचे सूखे तट पर होता था। नदी लोगों को पीने का पानी देती थी, जबकि उसके कगारों और तटों से लोगों को पत्थर मिलता था - उनके सभी औज़ारों की मुख्य सामग्री।

अब उन्हें मैमथ को दलदल से नदी के ऊँचे किनारे पर ले जाना होता था।

यहाँ भी दो नहीं, बल्कि दर्ज़नों हाथ जुट जाते थे। लोग अपने तेज़ फलवाले चकमकों का उपयोग बड़े सब्र के साथ मैमथ की मोटी चमड़ी, सख्त नसों और विशाल पेशियों को काटने और अलग करने के लिए करते। ज़्यादा अनुभववाले बूढ़े शिकारी नौजवान शिकारियों को दिखाते कि खोपड़ी और टाँगों को कहाँ देह से अलग करना चाहिए। आखिर, देह के टुकड़ों-टुकड़ों में कट जाने के बाद लम्बी चढ़ाई शुरू होती।

काम को तेज़ी से चलाने के लिए एक तरह की धुन निकालते हुए वे कोई बड़ी बालदार टाँग या ज़मीन से रगड़ खाती सूँड सहित सिर को घर घसीटकर लाने के लिए बड़े-बड़े दलों में बँट जाते।

आखिर थकान से निढाल वे पड़ाव पहुँच ही जाते। फिर क्या आनन्द मनाया जाता था! वे जानते थे कि मैमथ एक असली दावत है- एक ऐसी दावत, जिसका वे इतने लम्बे समय से इंतज़ार कर रहे थे। वे जानते थे कि मैमथ का मतलब है कई-बहुत सारे-दिनों के लिए भोजन का भण्डार।

अतीत की यात्रा

बाइसन और मैमथ के शिकारियों के पड़ावों में पाए जाने वाले औज़ारों में चकमक के दो औज़ार सबसे ज़्यादा मिलते हैं- एक बड़ा और आकार में तिकोना है, उसे दो तरफ़ से तेज़ किया गया है; दूसरा- तेज़ किनारों वाला और अर्धगोलाकार।

इन औज़ारों में से प्रत्येक विशिष्ट कामों के लिए बनाया गया लगता है, अन्यथा उनकी सूरत-शक्ल में इतना अन्तर न होता।

हम यह कैसे जान सकते हैं कि इनमें से प्रत्येक किस-किस काम के लिए था? औज़ारों को देखने के बाद, औज़ारों की जाँच करने के बाद हम इसका कुछ अनुमान कर सकते हैं।

फिर भी, सबसे अच्छा यही रहता कि हम पाषाण युग में वापस चले जाते और देखते कि प्रागैतिहासिक मानव अपने पत्थर के औज़ारों से किस तरह काम किया करते थे।

उपन्यासों में हमें अक़्सर इस तरह का वाक्य मिल जाया करता है- "चलिए दस वर्ष पीछे आ जाएँ।" ऐसी पुस्तक के लेखक के लिए

यह बाएँ हाथ का खेल होता है, क्योंकि वह जब और जहाँ चाहे, लौट सकता है। अपने पात्रों के बारे में भी वह हर तरह की कहानी गढ़ सकता है।

लेकिन अपनी इस सच्ची कहानी में हम क्या करें? हमें यहाँ कुछ भी गढ़ने का अधिकार नहीं है। फिर, जब पीछे की तरफ जाते हैं, तो हमें एक-दो नहीं, दसियों हज़ार साल पीछे जाना पड़ता है।

फिर भी, हम पाषाण युग में जा सकते हैं।

अगर तुम ऐसा करना चाहो, तो तुम्हें लम्बी यात्रा के लिए ज़रूरी सारा साज़-सामान जुटाना होगा। सबसे पहले तो तुम्हारे पास किरमिच का तम्बू होना चाहिए, जो तह करने पर पीठ पर लादने के थैले में आ सके। इसके अलावा तम्बू की बल्लियाँ, रस्सियों को बाँधने के खूँटे और खूँटों को गाड़ने के लिए एक छोटा हथौड़ा भी होना चाहिए। तुम्हें ढेरों चीज़ों की भी ज़रूरत होगी - धूप से अपने सिर को बचाने के लिए एक टोप, एक पतीला, एक स्टोव, एक मग, एक छुरी, एक चम्मच और एक प्लेट, एक दिशासूचक (कम्पास) और एक नक्शा। जब तुम अपना सारा सामान बाँध चुको तो एक बन्दूक भी ले लो (क्योंकि पाषाण युग में भोजन के लिए शिकार किए बिना नहीं जिया जा सकता)। तो जाओ और समुद्री जहाज़ का एक टिकट ख़रीद लो।

मगर टिकट बेचनेवाले से यह न कहना कि तुम पाषाण युग जा रहे हो। अगर तुमने ऐसा किया, तो हो सकता है कि वह समझ ले कि तुम पगला गए हो और डाक्टर को बुला भेजे, और तुम जहाज़ पर नहीं, बल्कि पागलखाने में पहुँच जाओ।

तुम्हारे टिकट पर यह नहीं लिखा होगा - ''पाषाण युग की वापसी यात्रा''।

तुम्हारा टिकट एकदम सामान्य होगा, जिस पर तुम्हारे पहुँचने के स्थान की जगह ''मेलबोर्न'' लिखा होगा।

टिकट जेब में आते ही तुम आस्ट्रेलिया जानेवाले जहाज़ पर सवार हो सकते हो। कुछ ही सप्ताह में तुम मेलबोर्न पहुँच जाओगे।

बात यह है कि धरती पर अभी तक ऐसी जगहें हैं, जहाँ लोग पत्थर के औज़ारों से काम करते है।

आस्ट्रेलिया में ऐसे आदिवासी हैं, जो अभी तक पत्थर के औज़ारों का इस्तेमाल करते हैं। हम यह जानने के लिए कि वे इन औज़ारों का किस प्रकार उपयोग करते हैं, इन्हीं लोगों के पास जा रहे हैं।

जगह-जगह काँटेदार झाड़ियों से भरे सूखे और निर्जन घास के मैदानों को पार करके हम आस्ट्रेलियाई शिकारियों के पड़ावों पर पहुँचेंगे। नदी के किनारे पेड़ों के झुरमुट के नीचे हम उनके छाल और

डालियों के बने डेरों के पास पहुँच जाएंगे।

डेरों के पास बच्चे धमा-चौकड़ी मचा रहे हैं, जबकि पास ही ज़मीन पर पालथी मारे बैठे पुरुष-औरतें काम कर रहे हैं। झबरे केशों और लम्बी दाढ़ीवाला एक बूढ़ा, शिकार में मारे कंगारू की खाल उतार रहा है। बूढ़ा चकमक के एक तिकोने छुरे का इस्तेमाल कर रहा है। अरे, यह तो चकमक का बिलकुल वैसा ही बड़ा औजार है, जिसके बारे में जानने के लिए हम इस लम्बी यात्रा पर निकले हैं!

पास ही एक औरत चकमक के लम्बे और पतले टुकड़े से कपड़ों के लिए खाल काट रही है। और फिर हम एक जानी-पहचानी चीज़ को देखते हैं : ठीक ऐसी ही लम्बी और पतली छुरियाँ यूरोप में प्राचीन शिकारियों के पड़ावों में भी मिली हैं।

ठीक है, आस्ट्रेलिया के आदिवासी प्रागैतिहासिक लोग नहीं हैं। हजारों पीढ़ियाँ उन्हें उनके प्रागैतिहासिक पूर्वजों से अलग करती हैं। उनके पत्थर के औजार अतीत के एक सामान्य अवशेष हैं। लेकिन अतीत के ये अवशेष हमारी कितनी ही पहेलियों को हल कर सकते हैं। आस्ट्रेलियाई आदिवासियों को काम करते देखते हुए हमारे ध्यान में यह बात आती है कि चकमक का बड़ा तिकोना टुकड़ा आदमी का औजार है, शिकारी का औजार है, जिससे वह फन्दे में पड़े हुए या घायल जानवर को मारता है, उसे चीरता है और उसकी खाल उतारता है।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, अलग-अलग प्रकार के कामों की जटिलता बढ़ती चली गई। उन सबको करने के लिए कुछ लोगों को एक प्रकार का काम करना पड़ता, तो औरों को और प्रकार का। जब पुरुष शिकार पर गए हुए होते, तो औरतें चूल्हों के पास खाली न बैठा करतीं। वे नए डेरे बनातीं, जानवरों की खालों से पोशाकें काटतीं, खाने योग्य कन्द-मूल इकट्ठा करतीं और खाने के भण्डार बनातीं।

(अगले अंक में जारी)

'मनुष्य महाबली कैसे बना! से साभार

प्रस्तुति : राजेश उत्साही

माथा पच्ची- हल : फ़रवरी 94 अंक के

1. तीन रोटियाँ सेंकने में चार मिनट लगेंगे।
3. तस्वीर न. 4
4. आकाश में ऊँचाई की ओर बढ़ने के साथ-साथ हवा का दवाब कम होता जाता है, अतः गुब्बारे के भीतर की हवा का आयतन बढ़ता है और गुब्बारा फूलता जाता है।
5. प्रश्नवाचक चिन्ह के स्थान पर 17 आएगा।
6. आम के अन्दर निकलने वाला कीड़ा परागण के समय अण्डे के रूप में फूल में बन्द हो जाता है और फिर फल के साथ ही पनपता है।
7. 10 और 7
8. दोनों गाड़ियाँ बराबर दूरी पर होंगी।
9. गड़बड़ यह हुई कि खोजी ने नक्शा उल्टा पकड़ लिया।

वर्ग पहेली-31 का हल अब मई, 94 के अंक में प्रकाशित होगा।

क़िस्सा आफन्ती का

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

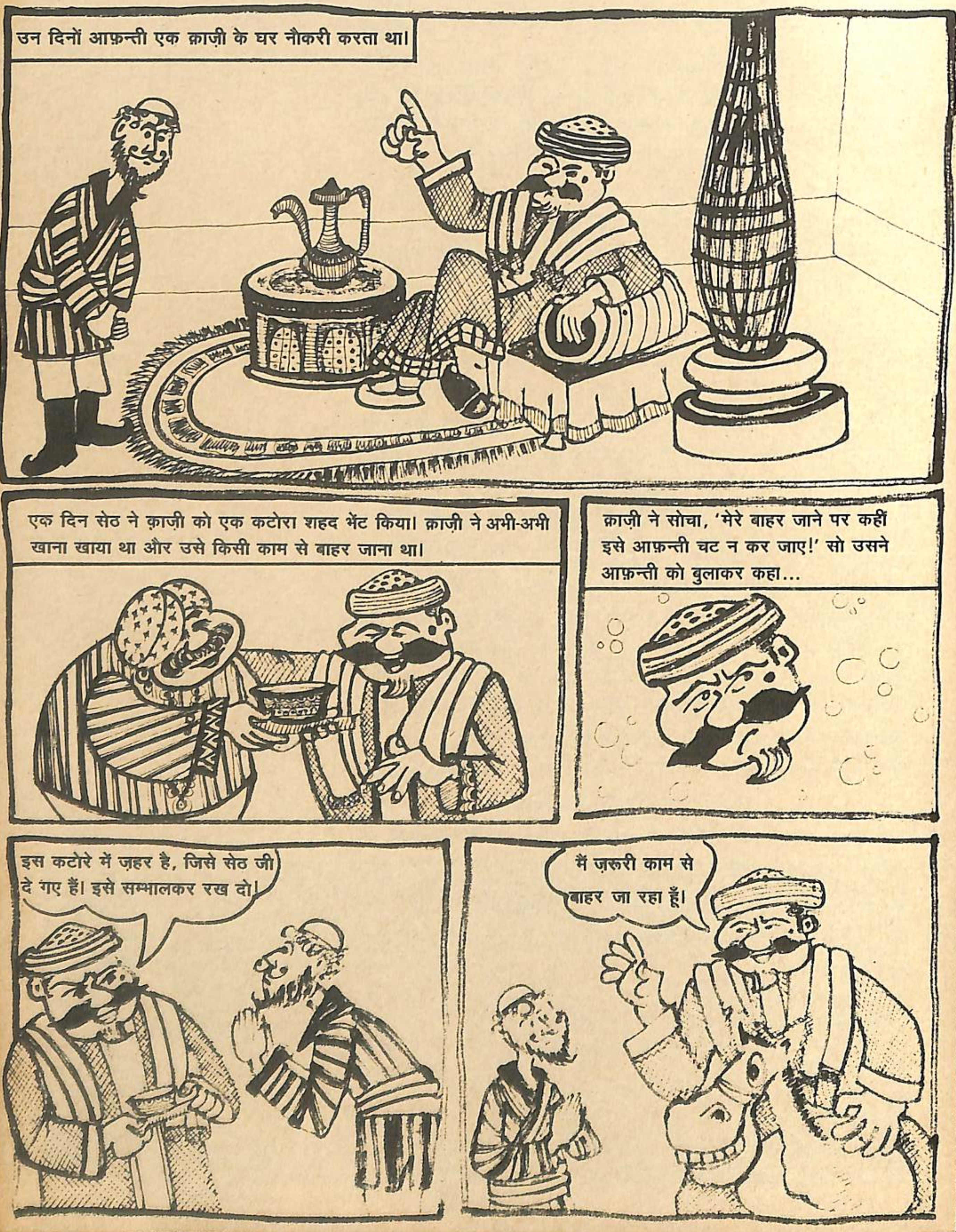

आफ़न्ती को पता था कि कटोरे में ज़हर नहीं है। सो क़ाज़ी के जाते ही उसने नान (एक तरह की रोटी) निकाली और शहद में डुबोकर खाने लगा।
वाह मज़ा आ गया!
फिर उसने क़ाज़ी के घर के सारे बर्तन-भांडे तोड़-फोड़ डाले।

और फिर आराम से बैठकर क़ाज़ी का इन्तज़ार करने लगा!
क़ाज़ी लौटा तो उसने देखा कि घर के सारे बर्तन-भांडे टूटे पड़े हैं और कटोरा ख़ाली!
ओ आफ़न्ती के बच्चे घर में क्या भूकम्प आया था? और कटोरे का ज़हर कहाँ है?
मालिक मुझसे एक भारी ग़लती हो गई। लापरवाही से आपके सारे बर्तन-भांडे मुझसे फूट गए . . .
आप मुझ पर नाराज़ होंगे और ज़रूर इसका मुआवजा माँगेंगे। मैं ग़रीब आदमी हूँ। कहाँ से दूँगा। सो मैंने सेठ जी का दिया सारा ज़हर पी लिया है और मरने का इन्तज़ार कर रहा हूँ!

बेर

बेर को तो तुम सभी जानते ही हो। बेर के पेड़ को भी तुम पहचानते ही होगे, आख़िर बेर तोड़ने के लिए बेर के पास तो गए ही होगे न। भई सभी ने एक-न-एक बार बेर के पेड़ को पत्थर मारकर, लम्बे बाँस से या पेड़ को हिलाकर बेर खाने का मज़ा ज़रूर ही उठाया होता है। काँटों से भरे बेर के पेड़ पर लटकते खट्टे-मीठे, छोटे-छोटे फल अपनी सुगंध से सभी को अपनी तरफ खींचते हैं।

बेर के पेड़ आसानी से किसी भी तरह की ज़मीन पर ऊग जाते हैं। बस इतना ही काफ़ी होता है कि जलवायु गर्म हो। हिन्दुस्तान के अलावा बेर के पेड़ दक्षिण एशिया के कई और देशों में भी होते हैं और ऑस्ट्रेलिया में भी पाए जाते हैं। यह पेड़ दक्षिण एशिया का ही मूल निवासी है।

बेर के पेड़ के छोटे, गोल पत्ते अप्रैल-मई में आना शुरू होते हैं। बेर के फूल बहुत छोटे होते हैं। इन फूलों में से खराब-सी गंध आती है। फूल बरसात के बाद खिलते हैं और फिर जाड़ों में फल आने लगते हैं। फलों का आकार अण्डे जैसा और छोर नुकीला होता है। कुछ किस्मों में गोल आकार के बेर भी होते हैं। बेर के फल का स्वाद तो तुम सभी जानते हो - खट्टा-मीठा, गूदेदार, रस भरा फल है यह।

बेर की कई क़िस्में मिलती हैं। लेकिन मुख्य रूप से दो जातियाँ होती हैं। एक वह जिसका पेड़ होता है। इसका फल आकार में बड़ा होता है। दूसरी क़िस्म में पेड़ नहीं झाड़ी होती है। इसका फल थोड़ा छोटा होता है। झाड़ी वाले बेर को जंगली बेर या झड़बेर कहते हैं। इन दो मुख्य जातियों की भी कई क़िस्में पाई जाती हैं। इनमें पत्तों का, फलों का आकार और रंग भी फ़र्क-फ़र्क होता है। इस सबके बावजूद हम कहीं भी देखकर या सूंघकर बेर को पहचान ही लेते हैं। नहीं क्या?

बेर के कई उपयोग हैं। इस पेड़ की लकड़ी अच्छी मानी जाती है। पत्ते पशुओं का चारा हैं। फलों को वैसे ही खाने के अलावा अचार बनाकर, सुखाकर कई तरह से उपयोग में लाते हैं। पेड़ के कई हिस्से दवाएँ बनाने के काम में भी आते हैं।

पंजाब में बेर के पेड़ पर लाख के कीड़े पाले जाते हैं। ये कीड़े कोमल पत्तियों का रस चूसते हैं। फिर इसे मल के रूप में निकालते हैं जो टहनियों पर जमा होता जाता है। ये नारंगी-से रंग का होता है। इसे साफ़ करके चपड़ा बनाया जाता है। इससे चूड़ियाँ, मुहर, वार्निश, ग्रामोफ़ोन के रिकार्ड आदि कई चीज़ें बनाने में मदद मिलती है। वैसे ये लाख के कीड़े और भी कई पेड़ों पर पाले जाते हैं। हाँ, लाख ज़्यादातर हमारे ही देश में बनती है। कहीं-कहीं बेर के पेड़ पर रेशम के कीड़े भी पाले जाते हैं।

□□□

'हमारे वृक्ष' का इस श्रंखला में अब तक इन वृक्षों के बारे में जानकारी प्रकाशित हुई है –

मार्च	92	पलाश	फ़रवरी	93	पपीता
अप्रैल	92	नीम	मार्च	93	अमलतास
मई	92	आम	अप्रैल	93	महुआ
जून	92	इमली	मई	93	काजू
जुलाई	92	कटहल	जून	93	गुलमोहर
अगस्त	92	बरगद	जुलाई	93	लीची
सितम्बर	92	शरीफ़ा	अगस्त	93	चम्पा
अक्टूबर	92	अमरूद	सितम्बर	93	जामुन
नवम्बर	92	बबूल	अक्टूबर	93	कदम्ब
दिसम्बर	92	आंवला	जनवरी	94	नारियल
जनवरी	93	कचनार	फ़रवरी	94	नाशपाती

डिब्बा

तुम्हें अपनी अटरम-शटरम चीज़ों को कबाड़कर रखने के लिए कई-कई डिब्बों की ज़रूरत पड़ती है। डिब्बे तुमने पहले भी बनाएँ हैं। आओ इस बार एक सरल लेकिन सुन्दर डिब्बा बनाते हैं। इसके लिए पोस्टकार्ड की मोटाई का कागज, गोंद, कैंची, स्केल, पेंसिल आदि की ज़रूरत पड़ेगी।

डिब्बा वर्गाकार बनेगा। तुम जितना बड़ा बनाना चाहो उसी हिसाब से यहाँ दी डिज़ाइन पेंसिल से मोटे काग़ज़ पर उतार लो। लेकिन एक नहीं, दो। एक डिज़ाइन से डिब्बे का आधा भाग बनेगा। और दूसरे से डिब्बे का शेष आधा भाग या ढक्कन। अब दोनों डिज़ाइनों को कैंची से काटकर अलग कर लो। अब प्रत्येक डिज़ाइन को टूटी हुई रेखाओं पर से चारों किनारों से मोड़ लो। निशान पक्के करके मोड़ वापस खोल लो।

अब इन डिज़ाइनों में कट लगाना है, कहाँ? यह तो तुम समझ ही गए होगे- उभारों के बाईं ओर। लेकिन ध्यान रहे चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं से बने बीच वाले वर्ग के कोने तक ही कट लगाना है।

इसके बाद कटे हुए सिरों को उभार वाले सिरों के अन्दर रखकर गोंद से चिपका दो। इसी तरह चारों सिरों को चिपका लो। यह डिब्बे का आधा हिस्सा तैयार हो गया। बस इसी तरह दूसरा हिस्सा भी तैयार कर लो। अब दोनों को एक-दूसरे के ऊपर रखो, लो बन गया डिब्बा।

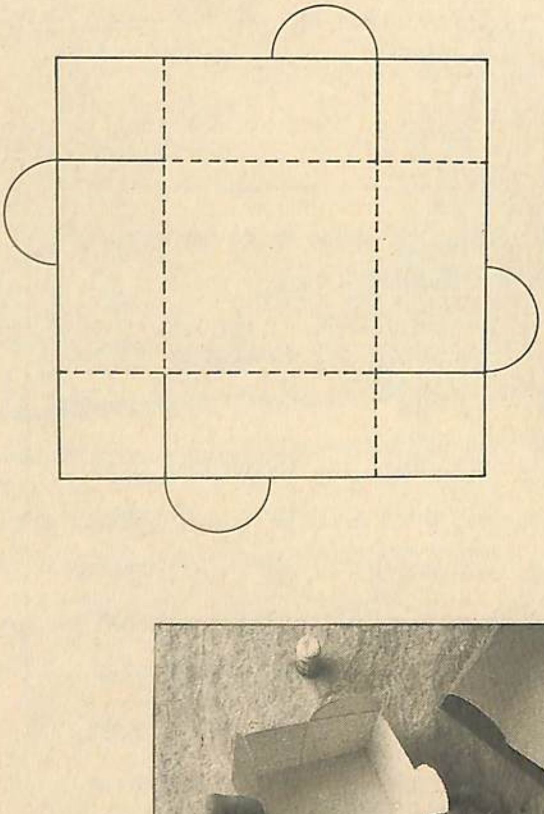

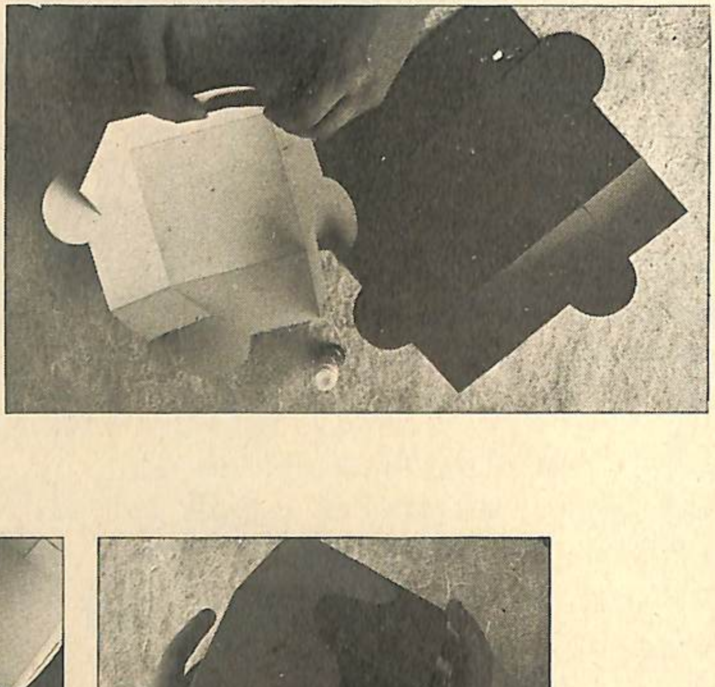

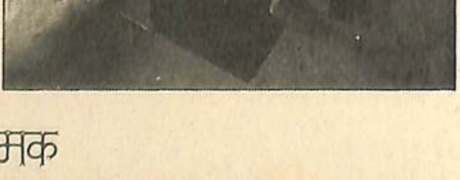

रंग और आकार कार्ड

उद्देश्य

'रंग और आकार' इन दो आधारों पर एक साथ वर्गीकरण करना।

विभिन्न रंगों और आकारों से भली भांति परिचित होना।

सामग्री

32 रंग और आकार कार्ड। इनमें 4 अलग-अलग आकारों को चार अलग- अलग रंगों से भरा गया है।

बच्चों की संख्या

4 से 8 बच्चे इस खेल को खेल सकते हैं।

रंगों के आधार पर

नीला बैंगनी लाल हरा

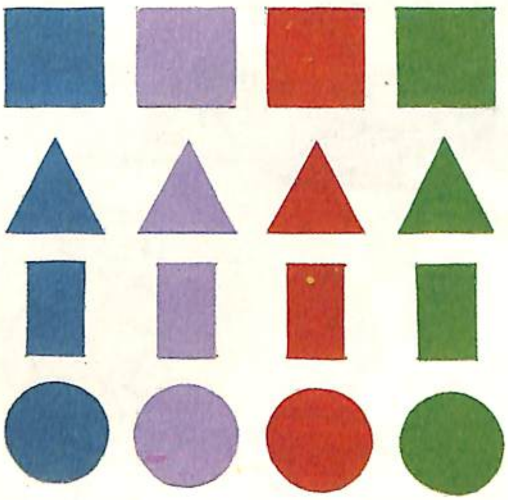

इनको रंग कार्ड की ही तरह खेला जाता है। बच्चों में सारे कार्ड बाँट दिए जाते हैं। एक बच्चा कार्ड फेंककर खेल शुरु करता है। क्रम से सभी बच्चे उस रंग और आकार के कार्ड फेंकते चलते हैं जब तक कि उस रंग और आकार के कार्ड ख़त्म नहीं हो जाते।

बच्चे इस खेल को रंग के आधार पर, आकार के आधार पर, रंग और आकार दोनों के आधार पर खेल सकते हैं।

खेल में दिलचस्पी बढ़ाने के लिये ऐसा भी कर सकते हैं कि एक बच्चा पत्ता फेंककर 'रंग' या 'आकार' कहे। यदि रंग कहता है तो बाकी बच्चों को उसके रंग के अनुसार खेलना होगा, वरना आकार के आधार पर। इस प्रकार हर बच्चे के साथ वर्गीकरण क़ा आधार बदलेगा।

आकारों के आधार पर

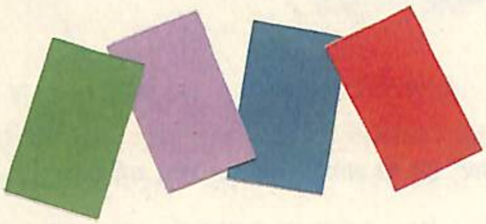

चतुर्भुज आकार

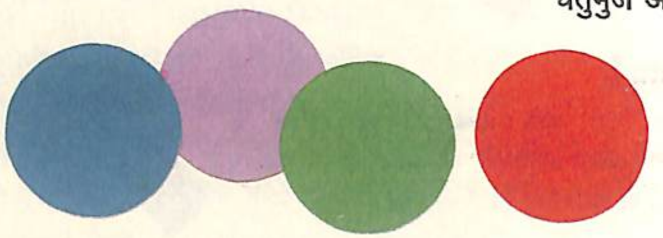

गोल आकार

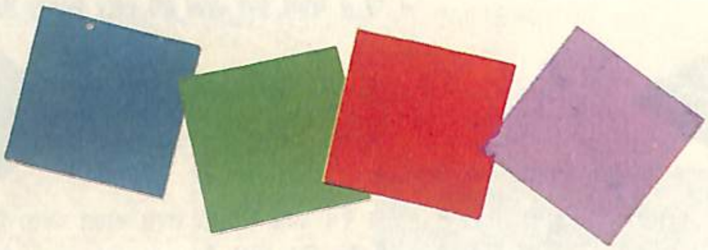

चौकोर आकार

तिकोन आकार

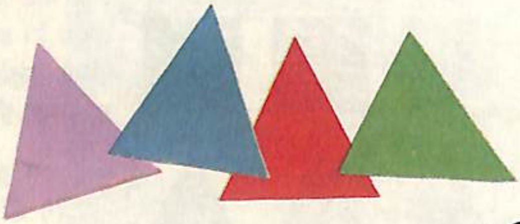

शिक्षकों को सामग्री प्रस्तुत करना चाहिए। बच्चों में वर्गीकरण की क्षमता के अनुसार खेल को सरल या जटिल रूपों में खिलवाना चाहिए। वर्गीकरण सही हो रहा है या गलत इसके लिए उन्हें सतर्क रहने के लिए कहना चाहिए।

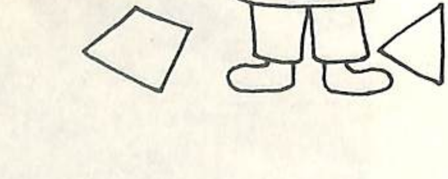

डूबना-तैरना

उद्देश्य

अपने आसपास की चीज़ों की विशेषताओं के बारे में अनुमान लगाना।
डूबने व तैरने वाली वस्तुओं का वर्गीकरण करना
प्रयोग द्वारा अपने अनुमान को सही–गलत बताने की प्रक्रिया को समझना।

सामग्री

बाल्टी, टब में पानी।
आसपास की डूबने-तैरने वाली वस्तुएँ जैसे पत्ती, टहनी, पत्थर, कागज़, पिन, पक्षी का पंख, पेन्सिल आदि।

बच्चों की संख्या

6 से 8 बच्चे इस खेल को खेल सकते हैं।

बच्चे आसपास से डूबने-तैरने वाली चीज़ें इकट्ठी करें। अब वे हर चीज़ के बारे में यह अनुमान लगाएं कि वह डूबेगी या तैरेगी और उसके अनुसार डूबने और तैरने वाली वस्तुओं के अलग-अलग समूह बनाएं।

तैरने वाली सामग्री

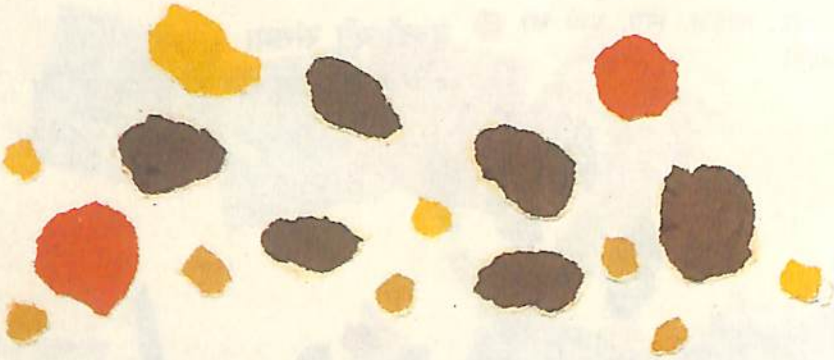

डूबने वाली सामग्री

- वस्तुएँ क्यों डूबी या तैरी इस पर चर्चा करना। वस्तुओं की विशेषताओं (भारी, हल्का, लोहे का, लकड़ी का, चपटा) को व्यक्त करने में मदद करना।

क्या-क्या चीज़ें डूब सकती हैं और क्या-क्या तैर सकती हैं इस पर चर्चा करना।

इसी प्रकार से वस्तुओं का अन्य विशेषताओं के आधार पर भी वर्गीकरण कर सकते हैं जैसे भारी-हल्का, सजीव-निर्जीव आदि।

❑ दीप्ति वैद्य
इन्डस्ट्रियल डिज़ाइन सेन्टर, बम्बई

मोज़ों से दावत

चित्रकथा : जैक केन्ट

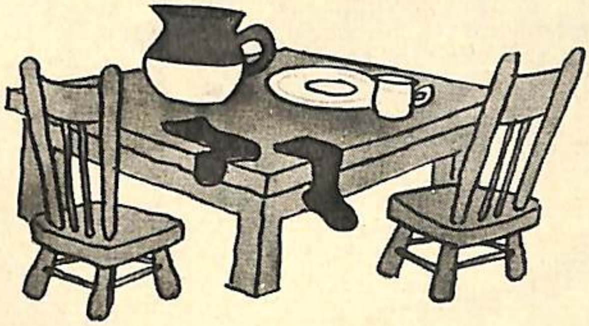

बहुत पुरानी बात है। कहीं बहुत दूर देश में एक नाना-नानी रहते थे।

उनके पास सिर्फ़ एक टूटी-फूटी झोपड़ी और शलजम का एक छोटा-सा बगीचा था।

एक दिन नाना ने नानी से कहा, "सिर्फ़ शलजम खा-खाकर उकता गए हैं।"

उनके घर से थोड़ी ही दूरी पर एक किसान परिवार रहता था। किसान के पास एक गाय भी थी।

नाना-नानी अक्सर उस गाय को चरते देखते और सोचते कि 'काश उन्हें भी दूध और डबलरोटी खाने को मिल सकती!'

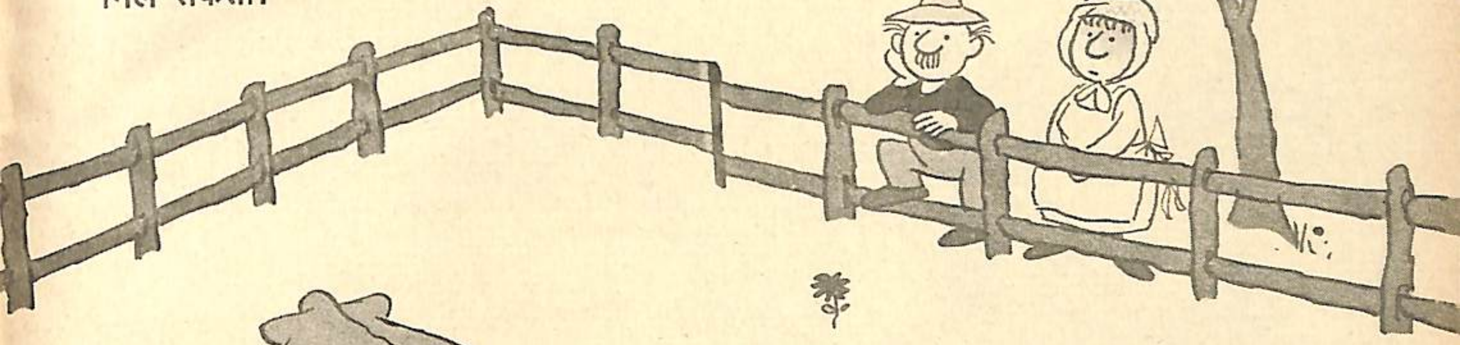

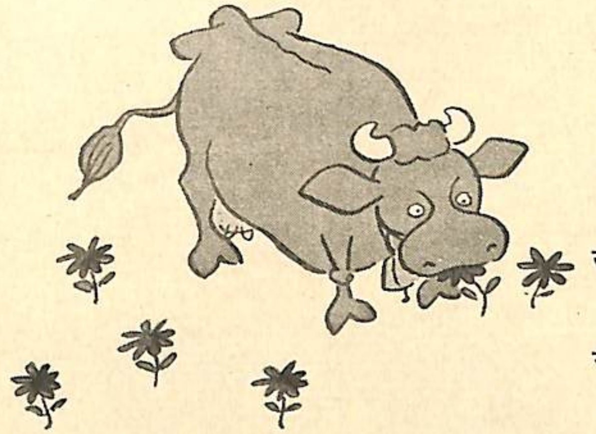

एक दिन –

"क्यों न हम उनसे कुछ दूध और डबलरोटी खरीद लें," नाना ने कहा।

"पर हमारे पास पैसे तो हैं ही नहीं!" नानी ने याद दिलाया।

"क्यों न हम उनसे किसी और चीज के बदले में दूध- डबलरोटी ले लें, नाना ने कहा।

"हाँ, शायद यह हो सकता है," नानी ने हामी भरी।

और फिर वे घर में जाकर ऐसी कोई चीज ढूँढने लगे। ढूँढते रहे – ढूँढते रहे। पर एक जोड़ी ऊनी मोजों को छोड़कर कोई चीज ऐसी नहीं थी, जो साबुत हो।

नाना ने मोज़ों की जोड़ी उठाई और किसान परिवार से मिलने चल दिए।

थोड़ी देर बाद नाना खुशी-खुशी घर लौटे – एक बाल्टी दूध और डबलरोटी के साथ।

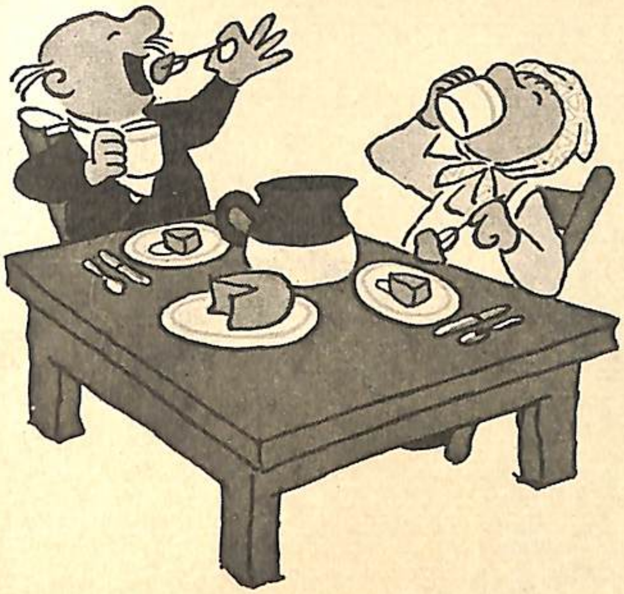

"ओह! मजा आ गया! क्या स्वादिष्ट खाना है।" नानी ने कहा।

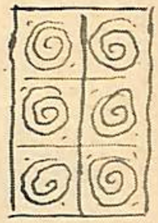

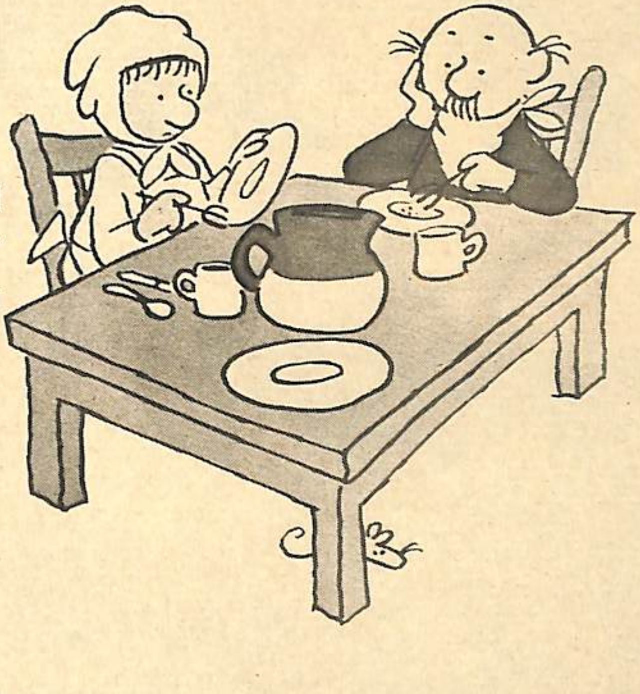

पर जल्दी ही पुराने दिन लौट आए। वे सोचने लगे कि काश कुछ और दूध-डबलरोटी मिल जाता। पर अब अदला-बदली के लिए मोज़े नहीं थे।

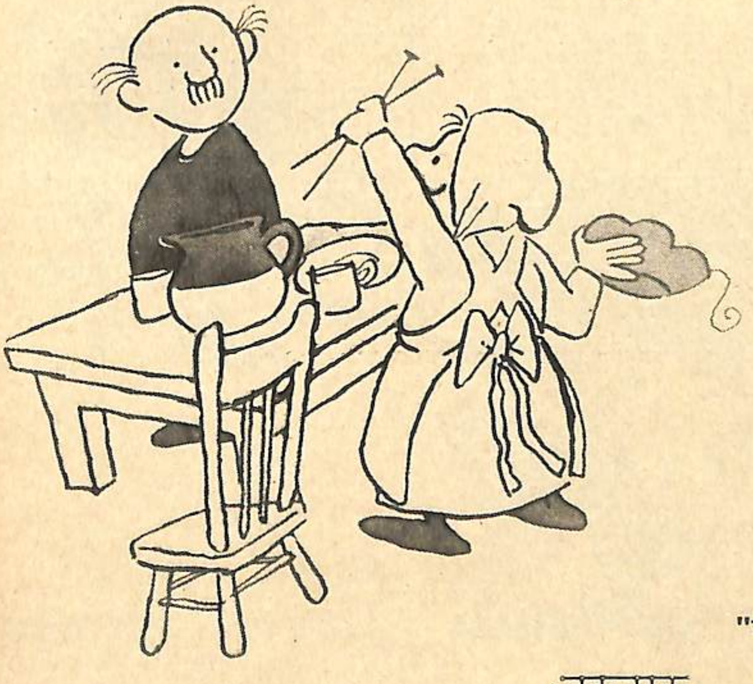

"मैं मोज़े बुन देती हूँ।" नानी ने कहा।

पर उनके पास ऊन तो था नहीं।

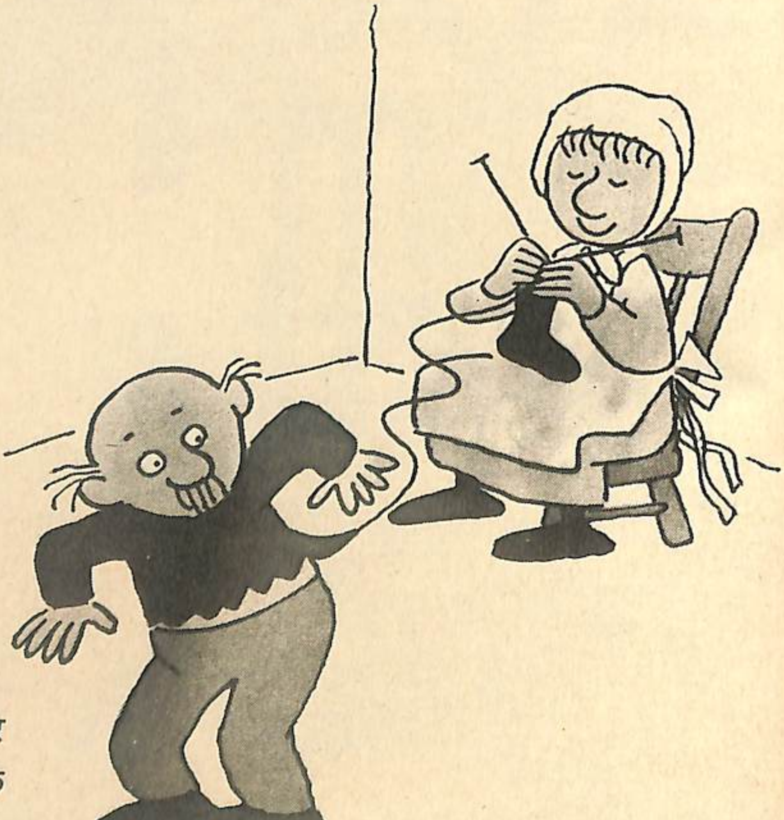

सो नानी ने नाना के स्वेटर का कुछ हिस्सा उधेड़कर एक जोड़ी मोज़े बुन लिए।

उन्हें फिर मोज़ों के बदले दूध
और डबलरोटी मिल गई।

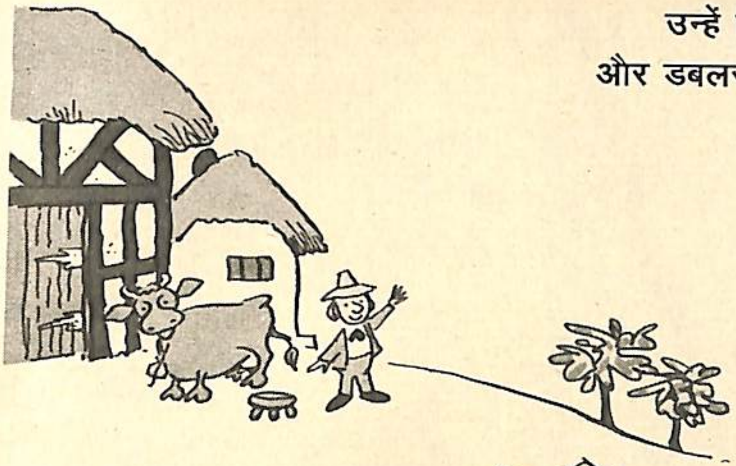

और फिर कुछ दिन तक
उन्होंने बढ़िया दावत उड़ाई।

जब दूध-डबलरोटी ख़त्म हो गया तो नानी ने नाना के स्वेटर से ऊन निकालकर एक जोड़ी मोज़े और बुन लिए।

एक बार फिर नाना उनके बदले में दूध-डबलरोटी ले आए।

"अहा!"

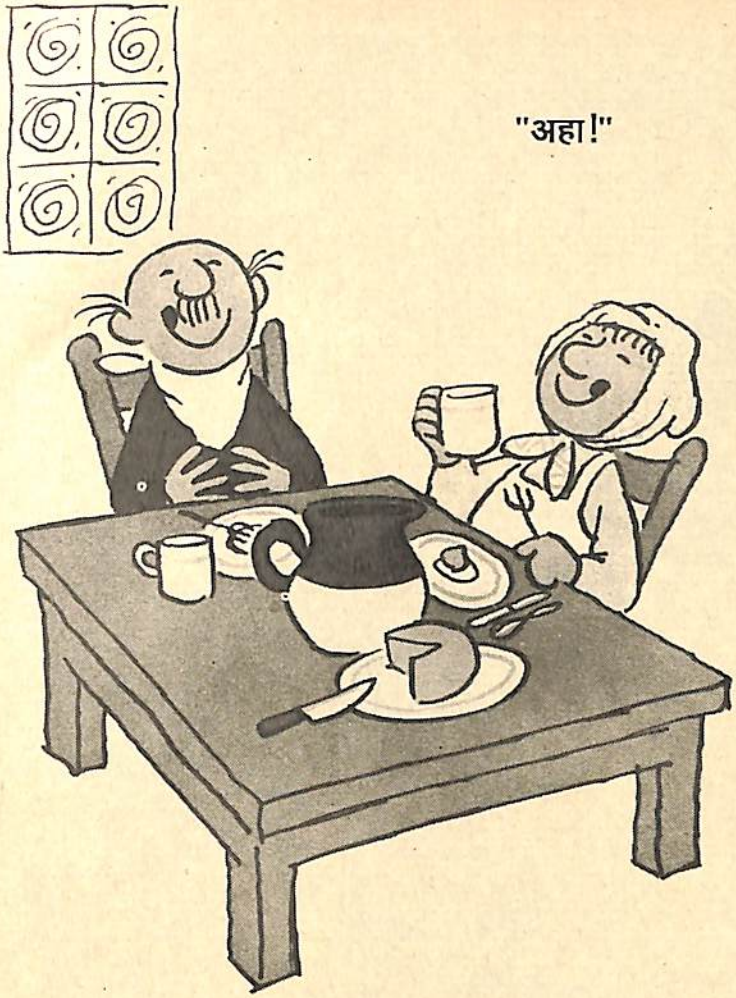

जब वह भी ख़त्म हो गया तो नानी ने फिर बुनना शुरू किया।

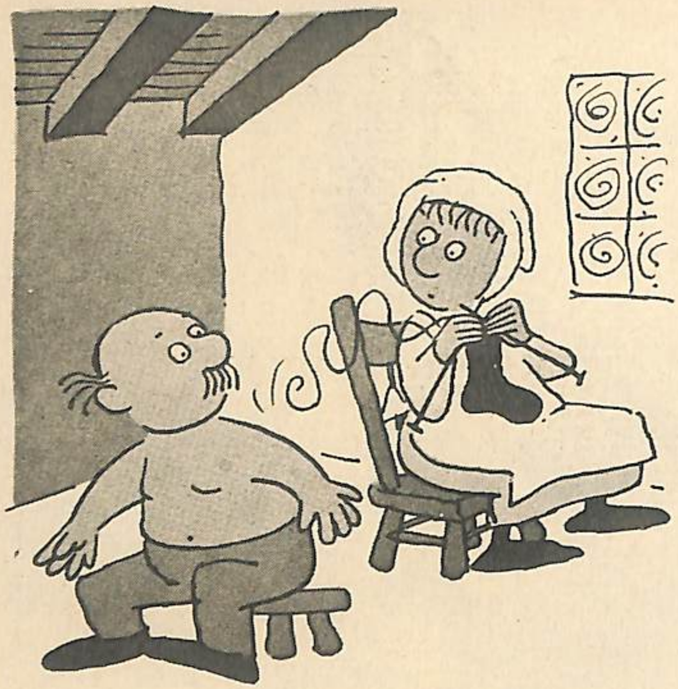

पर अब सिर्फ़ एक मोज़े लायक ही ऊन बचा था।

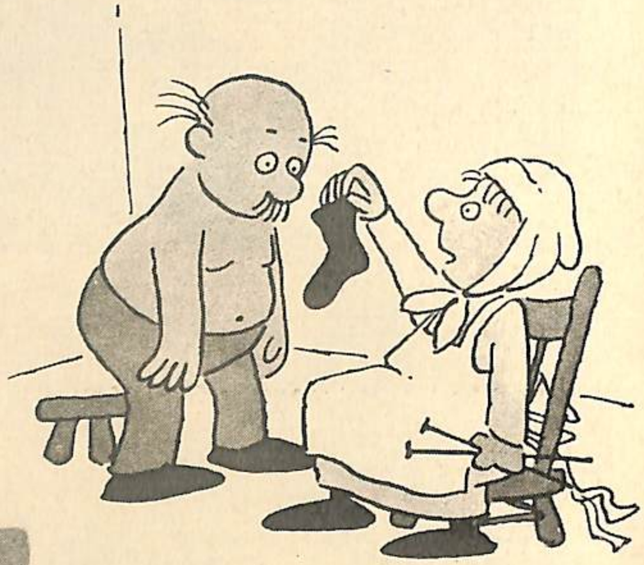

"एक मोज़े का क्या होगा?" नानी ने कहा, "इसके बदले तो कुछ भी नहीं मिलेगा!"

"कोशिश करते हैं," नाना ने कहा और मोज़ा लेकर किसान परिवार से मिलने चल पड़े।

जाकर उससे बोले, "इस बार मेरे पास सिर्फ़ एक मोज़ा है। क्या इसके बदले में आधी बाल्टी दूध और आधी डबल रोटी दे सकते हो?"

"अरे आधी-आधी क्यों! आप तो पूरी एक बाल्टी दूध और पूरी डबलरोटी ही ले जाओ।" किसान ने कहा।

"दरअसल मेरी पत्नी को एक ही मोज़े की ज़रूरत थी।" किसान ने कहा।

असल में नाना ने जो मोज़े उन्हें दिए थे उनको उधेड़कर किसान की पत्नी अपनी पति के लिए स्वेटर बुन रही थी। यह स्वेटर वह बड़े दिन पर उपहार में देना चाहती थी। और उसे पूरा करने के लिए उसे केवल एक मोज़े का ऊन ही चाहिए था।

स्वेटर बन गया। लेकिन जब बड़े दिन पर किसान ने पहना तो उसके नाप से बड़ा था।

तब किसान की पत्नी ने तय किया कि क्यों न स्वेटर नाना को भेंट कर दें। क्योंकि इन दिनों नाना बिना स्वेटर के ही घूमते दिखाई देते थे।

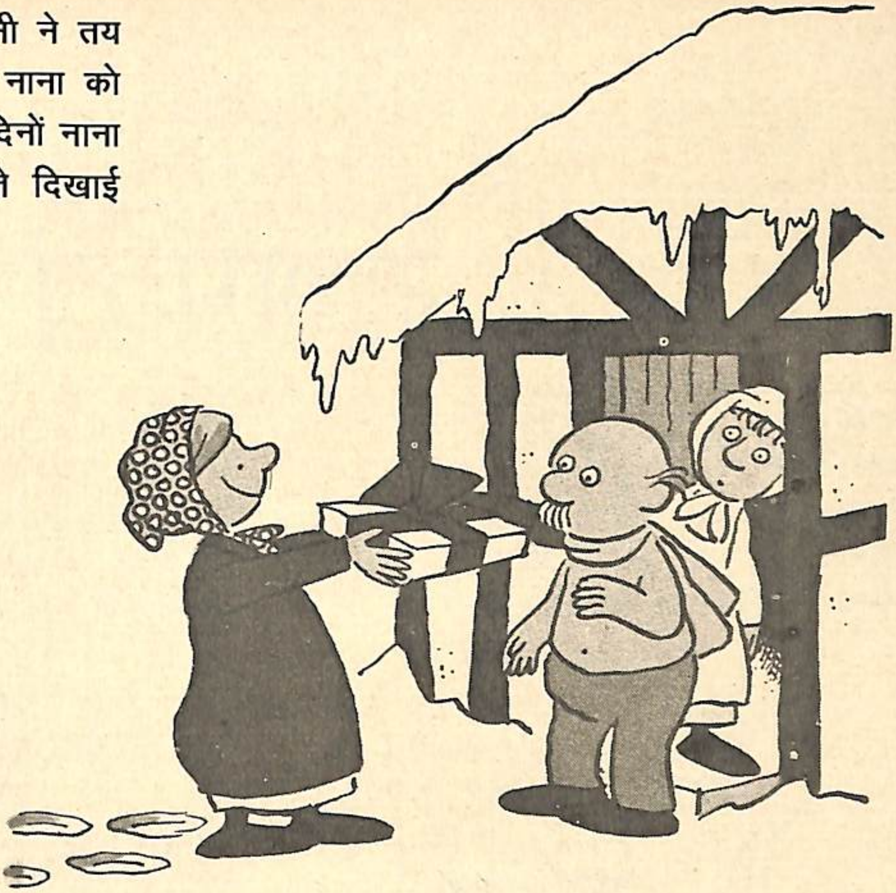

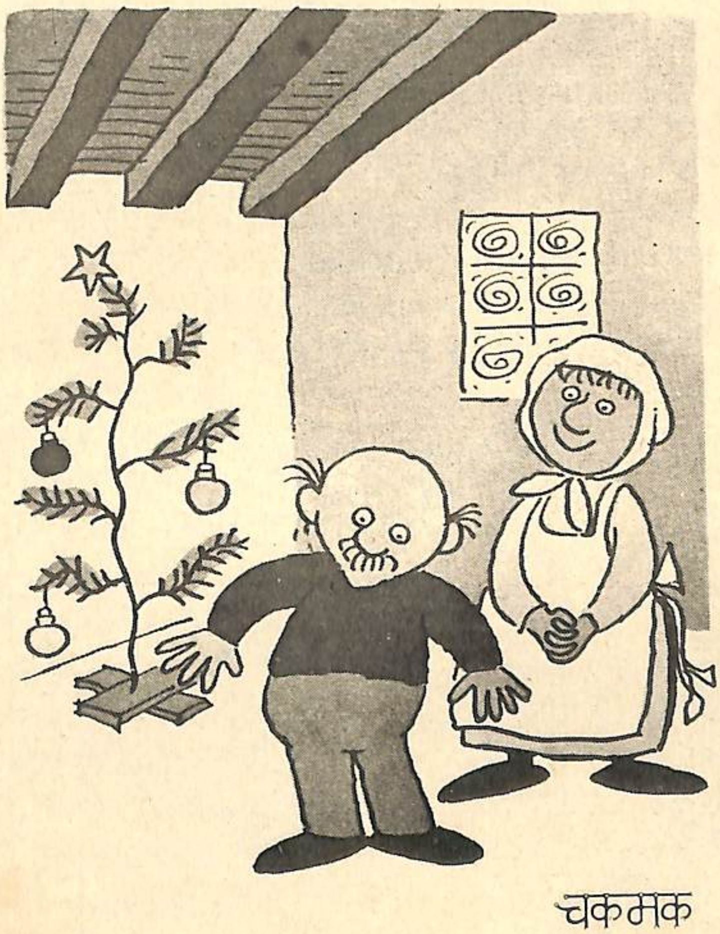

और नाना ने जब स्वेटर पहना तो पाया कि वह तो उनके ही नाप का है।

(पेरेंट्स मैगज़ीन प्रेस, न्यूयार्क द्वारा प्रकाशित पुस्तक सॉक्स फॉर सपर का हिन्दी अनुवाद, साभार)

माथापच्ची

(1)

एक ऐसी संख्या है जो न तो धन है न ऋण। उसका अपने आप में जोड़ भी वह खुद ही है। अपने आप में उसका गुणनफल भी वह खुद ही है। हाँ उस संख्या का उसी संख्या में भाग देने पर भाग एक नहीं आता बल्कि भाग देना सम्भव ही नहीं है। बूझो तो कौन है वह?

(2)

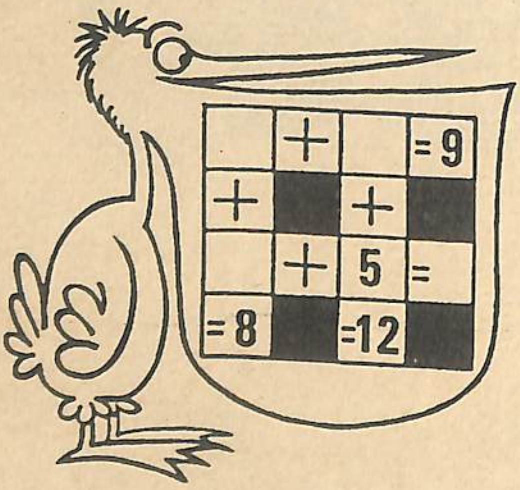

वो चार अंक खोजो जो इस वर्ग की खाली जगहों में आएंगे और जिनसे सवाल पूरा होगा?

(3)

सोचो कि एक पूरी तरह से बन्द गोला है इसके अन्दर एक चिड़िया है। अब इस गोले को तोला जाता है जबकि चिड़िया गोले के अन्दर बैठी है। इसके बाद चिड़िया गोले के ही अन्दर उड़ने लगती है इस स्थिति में गोले को फिर तोला जाए तो वज़न पहले से ज़्यादा होगा या कम?

(4)

दो अंकों की एक ऐसी संख्या ढूँढो जिसका दहाई का अंक इकाई के अंक से 4 कम है। यदि इन अंकों को उल्टे क्रम में लिखकर प्राप्त संख्या से पहले वाली संख्या घटाई जाए तो 27 मिलना चाहिए।

(5)

गुड्डी अकेली बैठी मेज़ पर रखी माचिस से खेल रही थी। उसने माचिस का खोखा ख़ाली करके मेज़ पर रखा और उस पर फूँक मारी तो खोखा सरककर दूर चला गया। गुड्डी सोचने लगी कि क्या कोई ऐसी तरकीब हो सकती है जिससे फूँकने पर खोखा मेरे पास आ जाए।
तुम भी सोचो और करके देखो।

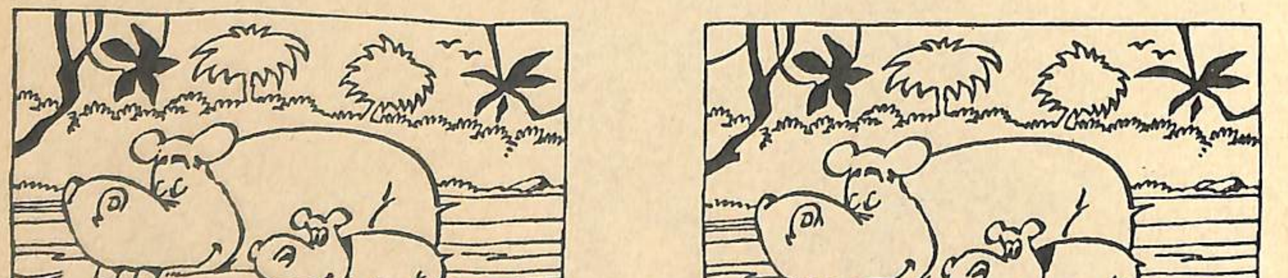

ये दोनों चित्र देखने में एक जैसे हैं फिर भी इनमें दस अन्तर हैं। ढूँढो तो जानें।

(6)

सात पक्के दोस्त थे। नए साल पर एक-दूसरे को कुछ-न-कुछ उपहार जरूर देते थे। पर इस नए साल को पारो ने पाया कि उसके पास सबके लिए उपहार लेने लायक पैसे नहीं थे। पर उसने अपने जन्मदिन पर इन्हीं दोस्तों के दिए उपहार सहेजकर रखे थे। अब उन्हीं को अदला-बदली करके देने का तय किया। इस तरह से बबलू का उपहार करण को मिला, करण का गुड्डी को। राना का उपहार उस लड़की को मिला जिसकी दी हुई किताब निशी को मिली। मीरा का दिया हुआ उपहार उसको मिला जिसकी दी हुई पेन राना को मिली।

पर मीरा को किसका उपहार मिला होगा?

(7)

1	1	8
2	5	13
3	21	?

क्या तुम इस वर्ग को पूरा कर सकते हो? इसमें दिए गए अंक एक ख़ास क्रम में हैं।

वर्ग पहेली - 33

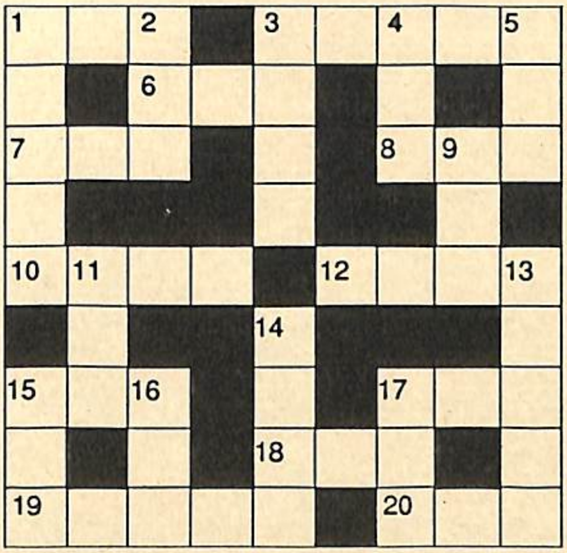

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. भेजे जाने वाले माल की सूची (3)
3. नीम का स्वाद और एक भाव भी (5)
6. 'मेरे ताश कम' की पूँछों में एक तरह का धागा (3)
7. मिट्टी का एक बर्तन (3)
8. ज्यों का त्यों (3)
10. सिलसिला (4)
12. बाँटने वाला (4)
15. नम्र (3)
17. सालन लाना में पूरा वर्ष (3)
18. नौकर (3)
19. आक्रमण करने वाला (5)
20. सलवार की पूँछ काटोगे तो प्रश्न उठेगा (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. हिसाब का वह तरीका जिसमें अज्ञात संख्या की जगह सूचक अक्षर होते हैं (2,3)
2. एक तो .... ऊपर से नीम चढ़ा (3)
3. तीर चलाने में निपुण (4)
4. उचित और जरूरी भी (3)
5. ख़िदमत (3)
9. उपस्थित (3)
11. नीरज की उलटपुलट में रात (3)
13. नई-नई बातें सोचने वाला (5)
14. चार मास की गड़बड़ में ख़बर (4)
15. कवि की पूँछ में अगर ग्रह जुड़ जाए तो भी अलग-अलग (3)
16. एक बाजा (3)
17. नदी, तालाब के किनारे रहने वाला एक पक्षी (3)

■ *लक्ष्मण सिंह क्षत्री, शिक्षक, कोरजा, बिलासपुर, म. प्र. द्वारा भेजी वर्ग पहेली पर आधारित।*

● सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन-माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली - 33 का हल जून, 94 अंक में देखें।

वर्ग पहेली - 33 का हल जून, 94 अंक में देखें।

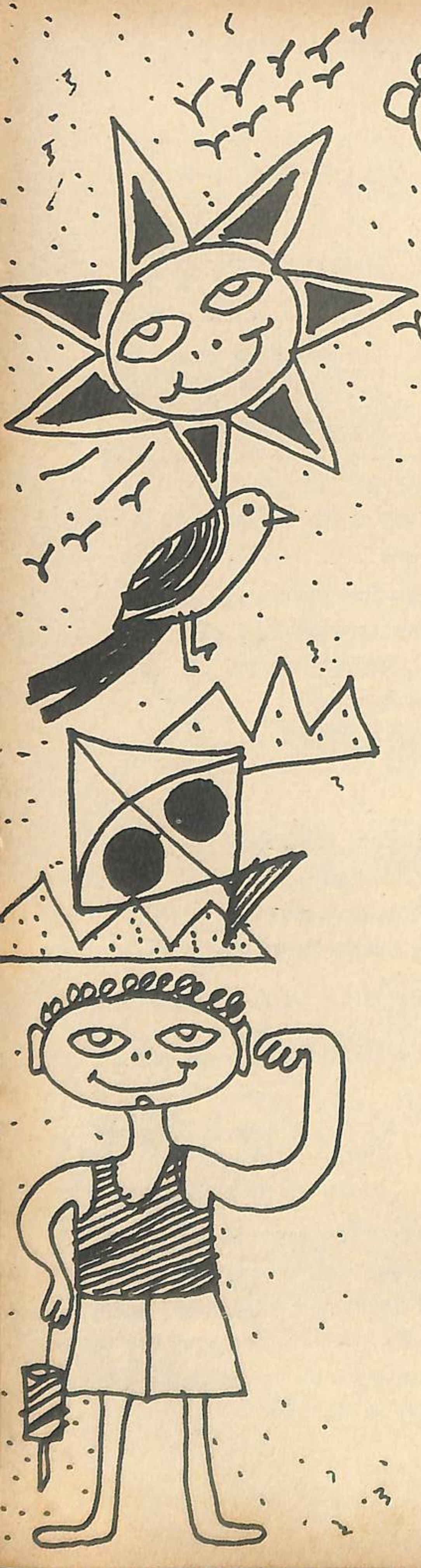

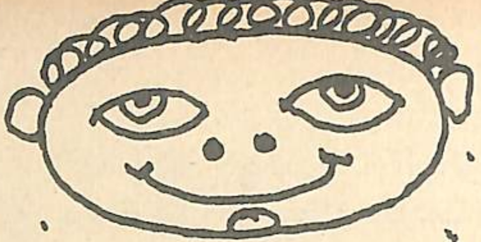

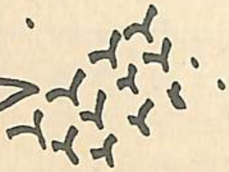

मन करता है

मन करता है सूरज बनकर
आसमान में दौड़ लगाऊँ

मन करता है चन्दा बनकर
सब तारों पर अकड़ दिखाऊँ

मन करता है बाबा बनकर
घर में सब पर धौंस जमाऊँ

मन करता है पापा बनकर
मैं भी अपनी मूँछ बढ़ाऊँ

मन करता है तितली बनकर
दूर-दूर उड़ता जाऊँ

मन करता है कोयल बनकर
मीठे-मीठे बोल सुनाऊँ

मन करता है चिड़िया बनकर
चीं चीं चूँ-चूँ शोर मचाऊँ

मन करता है चर्खी लेकर
पीली-लाल पतंग उड़ाऊँ

❑ डॉ. सुरेन्द्र विक्रम
चित्र : अक्षत चराटे

कुछ निराले पुल

अगस्त, 93 के अंक में तुमने पुलों के बारे में पढ़ा होगा और कुछ पुलों के चित्र भी देखे होंगे। उस अंक में हम भारत के कुछ महत्वपूर्ण पुलों के चित्र देना चाहते थे, लेकिन चित्र न मिलने के कारण सम्भव न हो सका।

इसी बीच हमें बम्बई से चकमक के एक पुराने पाठक विजेन्द्रसिंह राजपूत (जो रहने वाले तो होशंगाबाद के हैं) का पत्र मिला। उनका कहना था कि कलकत्ता के हावड़ा ब्रिज और रामेश्वरम् के पाम्बन पुल के बिना अगस्त अंक अधूरा ही रहा।

संयोग से अब हमें इन पुलों के चित्र मिल गए हैं, साथ ही कुछ और भी। तो आओ तुम भी देखो। चित्रों और उनसे सम्बंधित जानकारी के लिए हम श्री सी.वी. काण्ड के आभारी हैं।

***यह** है ग्वालियर-मुरैना राष्ट्रीय मार्ग क्रमांक-3 पर सांख नदी पर बना एक पुल। इस को सन् 1690 में औरंगजेब की बेटी जेबुन्निसा ने बनवाया था। कहा जाता है कि जेबुन्निसा दिल्ली से ग्वालियर आ रही थी। सांख नदी में बाढ़ आई हुई थी। सो फौरन पुल बनाने का हुक्म दिया। इस कहानी में कितना सच है, यह तो हम नहीं जानते। पर हाँ, यह एक ख़ूबसूरत पुल है, इसमें कोई शक नहीं।*

यह मेहराबदार पुल है। इसके हर खम्भे पर आने-जाने वालों के लिए, सुस्ताने-बैठने के लिए छतरियाँ बनाई गई हैं। इस चित्र में भी तीन छतरियाँ दिखाई दे रही हैं। छतरियों के नीचे छोटे-छोटे आले हैं पक्षियों के लिए। इनमें अक़्सर नीलकण्ठ घोंसला बनाते हैं।

यह पुल मुगल शैली में बना है। इस तरह के पुलों में खम्भों की चौड़ाई आमतौर पर ज्यादा होती है और बीच की खाली जगह कम चौड़ी।

कलकत्ता का मशहूर हावड़ा ब्रिज। यह पूरा का पूरा स्टील से बना है। इसकी लम्बाई लगभग 464 मीटर है। हुगली नदी पर बना यह पुल कलकत्ता और हावड़ा शहरों को आपस में जोड़ता है। इसे 1924 में बनाया गया था।

भारत का सबसे लम्बा पुल- महात्मा गांधी सेतु। यह पटना के पास गंगा नदी पर 1987 में बनकर तैयार हुआ है। 50 करोड़ की लागत से बने इस पुल की लम्बाई 5575 मीटर है।

ये हैं रामेश्वरम् जाने के लिए समुद्र पर बने सड़क और रेल के पुल। रेल पुल की लम्बाई 2057 मीटर है और यह 1904 में बनाया गया था। तेज़ हवा और खारे पानी के कारण इसकी पटरियों आदि में बहुत जल्दी जंग लग जाती है। इसलिए रेल्वे को इसकी बार-बार मरम्मत करानी होती है।

बाईं तरफ दिखाई दे रहा है 1988 में बनकर तैयार हुआ सड़क मार्ग का पाम्बन पुल। इसकी लम्बाई 2345 मीटर है। बीच में 115 मीटर का हिस्सा ऐसा है, जो समुद्री जहाज़ों को आने-जाने के लिए रास्ता देने के लिए खोला जा सकता है।

रामेश्वरम के पाम्बन पुल का एक दृश्य।

हाल ही में हुगली नदी पर हावड़ा ब्रिज जैसा ही यह एक और पुल बनाया गया है। इसे केबल स्टेंड पुल कहा जाता है। यह 35 मीटर चौड़ा और 823 मीटर लम्बा है। 1992 में बनकर तैयार हुए इस पुल में आठ समानान्तर सड़कें हैं। इसके दोनों छोरों पर इससे जुड़े अनेक छोटे-छोटे पुल (ओवर ब्रिज) हैं।

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/ 431/94

सौम्या सुरेश, सातवीं, भोपाल, म. प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना